Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित

प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

अखिल भारत
हिन्दू महासभा का मुखपत्र

साप्ताहिक

हिन्दू सभा वार्ता

वर्ष- 42 अंक-39
कल्पादि सम्वत् 1972949118

सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 12 दिसम्बर से 18 दिसम्बर 2018 तक
मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमी से मार्गशीर्ष शुक्ल दशमी 2075 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

नारी और पवित्रता.... पृष्ठ- 2

लौकी एवं कद्दू... पृष्ठ- 4

जल जिसका विकल्प... पृष्ठ- 5

क्रांतिकारी रामप्रसाद... पृष्ठ- 7

बीजेपी में बागी... पृष्ठ- 12

- हैदराबाद की जनता द्वारा इत्तेहाद को करारा जवाब
- विपक्ष में पीएम पद के दावेदार?
- राफेल सौदे का सच
- अवैध मस्जिद को सील करने पर बवाल
- ईरान सरकार पर आतंकवाद फैलाने का आरोप

न्यायपालिका और भाजपा की बुद्धि-शुद्धि के लिये हिन्दू महासभा ने अयोध्या में किया हवन एवं यज्ञ

● संवाददाता ●

अयोध्या। न्यायपालिका, भाजपा, आरएसएस एवं विश्व हिन्दू परिषद् की बुद्धि–शुद्धि के लिये अखिल भारत हिन्दू महासभा ने निर्मोही अखाड़ा के साथ मिलकर श्री राम के जन्मस्थान अयोध्या में हवन एवं यज्ञ का आयोजन किया। अखिल भारतीय रामनंदीय निर्मोही अखाड़ा में आयोजित हवन एवं यज्ञ में अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चन्द्र प्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महामंत्री श्री मुन्ना कुमार शर्मा, निर्मोही अखाड़ा के महंत श्री दिनेद्र दास जी महाराज, उत्तर प्रदेश के हिन्दू महासभा प्रदेशाध्यक्ष श्री योगेन्द्र वर्मा, प्रदेश उपाध्यक्ष श्री कुंवर विवेक उत्तर प्रदेश महिला अध्यक्ष सुश्री साक्षी वर्मा, सहित फैजाबाद, सुलतानपुर एवं अमेठी के जिला इकाइयों के पदाधिकारी एवं बड़ी संख्या में कार्यकर्ता सम्मिलित शेष पृष्ठ 11 पर

हिन्दू महासभा शीघ्र बनायेगी भव्य श्री राम मंदिर, कार्यकर्ता सम्मेलन का भव्य आयोजन

● संवाददाता ●

सुलतानपुर। अखिल भारत हिन्दू महासभा, सुलतानपुर जिला इकाई द्वारा सुलतानपुर में कार्यकर्ता सम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया। सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चन्द्र प्रकाश कौशिक एवं मुख्य वक्ता के रूप में राष्ट्रीय महामंत्री श्री मुन्ना कुमार शर्मा उपस्थित थे। सर्वप्रथम श्री चन्द्र प्रकाश कौशिक, श्री मुन्ना कुमार शर्मा एवं उत्तर प्रदेश के प्रदेशाध्यक्ष श्री योगेन्द्र वर्मा ने दीप प्रज्जवलित कर सम्मेलन का उद्घाटन किया एवं स्थानीय सामाजिक कार्यकर्ताओं एवं पत्रकारों को सम्मानित किया।

सम्मेलन को संबोधित करते हुए श्री चन्द्र प्रकाश कौशिक ने कहा कि अखिल भारत हिन्दू महासभा श्री राम जन्मभूमि पर शीघ्र भव्य मंदिर का निर्माण करेगी। उन्होंने कहा कि हम इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ पीठ से भी जीते हैं और उच्चतम न्यायालय में भी जीतेंगे। उच्चतम न्यायालय के निर्णय के तुरंत बाद हिन्दू महासभा भव्य मंदिर का निर्माण कार्य शुरू कर देगी। मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए श्री मुन्ना कुमार शर्मा ने कहा कि विवादित ढांचे में श्री रामलला के प्रकटीकरण के समय से ही हिन्दू महासभा श्री रामजन्म भूमि की लड़ाई लड़ रही है। हिन्दू महासभा के तत्कालीन नेता महंत दिग्विजय नाथ ने श्री रामजन्म भूमि पर मंदिर निर्माण की लड़ाई शुरू की थी। न्यायालय में पूजा की अनुमति के लिये भी याचिका सर्वप्रथम हिन्दू महासभा ने दाखिल की थी। हम अभी भी उच्चतम न्यायालय में मजबूती से लड़ रहे हैं। हमारी जीत अवश्य होगी। उन्होंने कांग्रेस और भाजपा पर वोट बैंक की राजनीति करने का आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि दोनों पार्टियां मिलकर देश की जनता को गुमराह कर रही हैं। ६० वर्षों शेष पृष्ठ 10 पर

नारी और पवित्रता का आदर्श

स्वामी शिवानन्द जी महाराज

नारी परिवार का शृंगार है और नारी के शृंगार हैं–उसके पवित्र आदर्श। तन की पवित्रता, मन की विशुद्धता और हृदय की निर्मलता रसे नारी सबकी प्रिय बन जाती है। मनुष्य जीवन का पूर्ण सौन्दर्य स्त्री में ही केन्द्रित है। जाति व राष्ट्ररूप से पथ–प्रदर्शन करने की शक्ति नारी रूप में ही है। वही शक्ति अपने छोटे से घर की साम्राज्ञी है। वह विधाता के विराट शरीर की अधिष्ठात्री देवी है। एक पवित्र नारी घर का दीपक है और अपनी पवित्रता से कुल को प्रकाशित करने वाली हीरकमणि है। उसके तपोबल से दूध, पूत और लक्ष्मी की वृद्धि होती है। घर में नित्य सुख और आनन्द की वर्षा होती है। वह साक्षात् देवी है। प्रत्येक कुलनारी को चाहिए कि वह अपने हृदय की पवित्रता को बनाये रखे तथा सादगी का विकास करे। उसे बाहरी सज–धज के जंजाल में न पड़कर अपने आन्तरिक सौन्दर्य को बनाये रखना चाहिए। नारियों की शोभा मनसा–वाचा–कर्मणा पवित्र रहने में ही है।

आप नित्य शुद्धस्वरूपा हैं। निष्काम सेवा–भाव, प्रेम, दान, स्वाध्याय, सत्संग, जप–प्रार्थना एवं आत्म–निरीक्षण के अभ्यास द्वारा पुनः अपनी मूल पवित्रता को प्राप्त कर लें जिसे आप मन तथा इन्द्रियों के संग खो बैठी हैं। बुद्धि को विशुद्ध करें। हृदय को शुद्ध करें। प्राणों को पावन करें। शरीर में शुचिता लायें। वाणी को पवित्र करें। पवित्रता दो प्रकार की होती है–आन्तरिक तथा बाह्य। आन्तरिक शुद्धि का अर्थ है–राग–द्वेष–रहित होना, उद्देश्यों की पवित्रता तथा भावों की शुचिता बनाये रखना। स्नानादि से शरीर की शुद्धि, वस्त्र, मकान तथा वातावरण को शुद्ध रखना बाह्य पवित्रता है। बाह्य शुद्धि से विचारों में पवित्रता आती है। आन्तरिक शुद्धि का महत्त्व बाह्य शुद्धि से अधिक रहता है। इससे आनन्द, प्रेम, बल, सन्तुलन, गम्भीरता, प्रसन्नता, एकरसता, सहिष्णुता, उदारता आदि गुण भी प्राप्त हो जाते हैं। शुद्ध सात्त्विक भोजन से मन पवित्र रहता है।

मन को पवित्र करने में पर्याप्त समय लग जाता है। जैसे दरी के नीचे कूड़ा–करकट एकत्र हो जाता है, इसी तरह मन के कोनों में कई प्रकार की मलिनताएँ छिपी रहती हैं। आसक्ति और वासनाओं का मूलोच्छेदन कर पाने पर मनः स्वतः शुद्ध, निर्मल व पवित्र हो जाता है। इच्छाएँ–वासनाएँ इन्द्रियों को प्रेरित करती हैं। इन्द्रिय–नियंत्रण द्वारा इच्छाओं को वश में कर सकते हैं। तप से इन्द्रियाँ नियंत्रित होती हैं और इच्छाएँ नष्ट हो जाती हैं। तप ही मन को पवित्र करता है। यही तप आपके पशुत्व को दिव्यत्व में बदल देता है। तप ही मन से काम–क्रोध–लोभ आदि को दूर कर इसे पवित्र करता है। मानसिक तप की शक्ति शारीरिक तप की शक्ति से कहीं अधिक रहती है। शारीरिक तप से शरीर संयमित हो जाता है परन्तु मन पर नियंत्रण नहीं हो पाता। प्रत्येक परिस्थिति में मन का समत्व, अपमान–पीड़ा–क्षति सहना, सौम्य, सन्तुष्ट तथा शान्त रहना, विपरीत स्थिति में प्रसन्न रहना, प्रत्युत्पन्नमति व धीरता बनाये रखना मानसिक तप के उदाहरण हैं। अपने विचार पवित्र रखिए। विचारों में पवित्रता होने पर आचरण स्वतः पवित्र रहेगा। ध्यान रखिए–विचार एक संचालक शक्ति है। आपका पवित्र विचार सर्वप्रकारेण आपके लिए महत्त्वपूर्ण होता है। विचारों के गुणों और प्रभाव पर ही आपकी शक्ति, मानसिक शक्ति, आपके जीवन की सफलता एवं प्रसन्नता (जो आपकी संगति में अन्यों को प्राप्त हो सकती है) निर्भर करती है। आपको विचारोत्कर्ष का ज्ञान रहना ही चाहिए। विचारोत्कर्ष की विद्या एक शुद्ध विज्ञान है। आपके अपने विचार जैसे भी हों, वे आपके साथ ही रहते हैं।

विचारों की अपनी सन्तति होती है। एक शुभ तथा पवित्र विचार से तीन वरदान मिलते हैं। पहला, विचारक का मानसिक उन्नति से अपना भला होता है। दूसरा, जिसके बारे में विचार किया जाता है, उसका भला होता है। तीसरे मानसिक वातावरण के शुद्ध हो जाने से सारी मानवता का भला होता है। शुभ विचार आनन्दप्रदायक हैं तो निम्न विचार दुःखदायक व कष्टदायक। विचारों से ही कर्मों की उत्पत्ति होती है। यदि आपने प्रारम्भ में ही बुरे विचारों को समूल नष्ट कर दिया तो अशुभ कर्म हो ही नहीं सकेंगे। अन्तरावलोकन द्वारा सावधानीपूर्वक अपने विचारों पर अंकुश रखें। **शेष पृष्ठ 11 पर**

साप्ताहिक राशिफल

मेष : इस सप्ताह आप आश्चर्यजनक घटनाओं को लेकर चिन्तित रहेंगे। दूर–दराज के लोगों से मेल–मिलाप होगा। सामाजिक मान–सम्मान में वृद्धि होगी। सरकारी कर्मचारियों को रूके हुये धन की प्राप्ति हो सकती है।

वृष : निराशा हावी होगी जिससे गलत निर्णय लेने की आशंका है। आश्चर्यजनक तथ्य सामने आ सकते है। किसी प्रिय से वैचारिक मतभेद हो सकते है। छात्रों को प्रतियोगी परिक्षाओं में सकारात्मक परिणाम मिलेंगे। नौकरी में परिवर्तन व स्व रोजगार के संकेत नजर आ रहें है।

मिथुन : इस सप्ताह आप–अपनी बात रखने में सफल होंगे जिससे मानसिक उर्जा में वृद्धि होगी। सहयोगी विद्रोह करने में सफल होंगे ऐसी स्थिति में आप हिम्मत से काम लें। अतिरिक्त जिम्मेदरी निभाने के लिए तैयार रहिए। कुछ कार्य समय पर पूरे न होने से मन दुःखी हो सकता है।

कर्क : इस सप्ताह किसी महत्वपूर्ण कार्य में त्वरित निर्णय लेने पड़ सकते है। कुछ लोगों के साथ अपमान जनक स्थिति आ सकती है। हताशा और निराशा आपके जीवन में घर न करने पायें। मजबूरन रूढ़िवादी तरीके अपनाने पड़ सकते है।

सिंह : परिवार में विरोधाभास की स्थिति रहेगी जिसके कारण मृगतृष्णा आप पर पूरी तरह हावी रहेगी। उच्चअधिकारियों से किसी बात पर मनमुटाव हो सकता है। आपके कार्य क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी इसलिए नयें पैतरें खेलने पड़ सकते है।

कन्या : इस सप्ताह आसान काम भी चुनौती के रूप में नजर आयेंगे। मानसिक दक्षता बढ़ाने में प्रयासरत रहेंगे। वाणी का प्रभाव बढ़ेगा लिहाजा लोग आपकी बात को मानेंगे। जिम्मेदारी निभाने में कोई नयी रणनीति सफलता दिला सकती है। किसी विषय में आप मतिभ्रम का शिकार हो सकते है।

तुला : इस सप्ताह उहापोह की स्थिति बनी रहेगी। पुराने मित्र आपके करीब आ सकते है। अपने निजी कार्यो पर अधिक परिश्रम करने की जरूरत है। ध्यान भटकेगा किन्तु संयम बनायें रखें। आन्तरिक संघर्ष बढ़ने के संकेत नजर आ रहें है।

वृश्चिक : परिवार की ओर से मिल रहे सहयोग में विराम लग सकता है जिससे हकीकत का सामना होगा। कठिन परिस्थितियॉ सामने आ सकती है। पथ प्रदर्शक दूरी बना सकते है। योजनायें लम्बित हो सकती है।

धनु : विरोधियों के तमाम प्रंपचों के बावजूद भी अन्त में आपकी ही विजय होगी। आपके रूखे स्वभाव के कारण अपने ही लोग हानि पहुँचा सकते है। आर्थिक मामलों में सामान्य स्थिति बनी रहेगी। व्यवसायी वर्ग अनिर्णय की स्थिति में रह सकता है।

मकर : भागदौड़ की स्थिति बनी रहेगी। अपनी क्षमतायें बढ़ायें। योजनाओं का फल आपके अनुरूप नहीं मिलने से मन चिन्तित रहेगा। लोग आप पर निर्भर रहेंगे किन्तु आप उनकी मदद न करकर उन्हे प्रेरणा देने का काम करें। किसी भी कार्य में अन्तिम समय में अपने विचार न बदलें।

कुम्भ : यह सप्ताह आपके लिए परिवर्तन एंव लाभकारी प्रतीत होगा। सम्बन्धों के माध्यम से कोई रूका हुआ कार्य सम्पन्न होगा। जिस राह पर आप चल रहें है, वह कांटो भरी है। कर्म की प्रधानता के फलस्वरूप जीवन में सुधार आयेगा। अतिथि की तहे दिल से सेवा करने पर महसूस होगा।

मीन : इस सप्ताह बहुत सारे रूके हुये कार्यो में प्रगति होगी। समाजिक सम्बन्धों का लाभ मिलेगा। सन्तान के प्रति प्रतीकात्मक त्याग करना पड़ सकता है। हर कार्य का अपना नियत समय होता है, इसलिए परेशान होने की आवश्यकता नहीं है।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीरामचरितमानस

उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम्।
सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम्।।५।।

उत्पत्ति, स्थिति (पालन) और संहार करने वाली, क्लेशों की हरने वाली तथा सम्पूर्ण कल्याणों की करने वाली श्रीरामचन्द्रजी की प्रियतमा श्रीसीताजी को मैं नमस्कार करता हूँ।।५।।

यन्मायावशवर्त्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवासुरा
यत्सत्त्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः।
यत्पादप्लवमेकमेव हि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां
वन्देऽहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिम्।।६।।

जिनकी माया के वशीभूत सम्पूर्ण विश्व, ब्रह्मादि देवता और असुर हैं, जिनकी सत्ता से रस्सी में सर्प के भ्रम की भाँति यह सारा दृश्य–जगत् सत्य ही प्रतीत होता है और जिनके केवल चरण ही भवसागर से तरने की इच्छा वालों की लिये एकमात्र नौका हैं उन समस्त कारणों से पर (सब कारणों के कारण और सबसे श्रेष्ठ) राम कहाने वाले भगवान् हरि की मैं वन्दना करता हूँ।।६।।

नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद् रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि।
स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथगाथा-भाषानिबन्धमतिमञ्जुलमातनोति।।७।।

अनेक पुराण, वेद और (तन्त्र) शास्त्र से सम्मत तथा जो रामायण में वर्णित है और कुछ अन्यत्र से भी उपलब्ध श्रीरघुनाथजी की कथा को तुलसीदास अपने अन्तःकरण के सुख के लिये अत्यन्त मनोहर भाषारचना में विस्तृत करता है।।७।।

साप्ताहिक
हिन्दू सभा
वार्ता
दिनांक 12 दिसम्बर से 18 दिसम्बर 2018 तक

अध्यक्षीय

बेईमान पाकिस्तान का चालाक इमरान

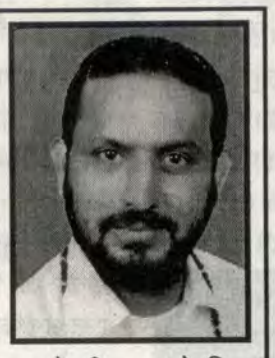

करतार पुर कॉरीडोर के खुलने के पीछे पाकिस्तान की नीयत कितनी साफ है इसका सहज अंदाज इस बात से लगाया जा सकता है कि शिलान्यास के ठीक दूसरे दिन एक साक्षात्कार में पाकिस्तान के विदेश मंत्री ने इसे इमरान का चालाकी भरा कदम बताया। अगर पाकिस्तान की अंतरात्मा साफ होती तो शिलान्यास कार्यक्रम में कश्मीर का मुद्दा उछालना और आतंकवाद का जिक्र न करना क्या है। पाकिस्तान के सीमावर्ती इलाके में स्थित सिखों के पवित्र तीर्थस्थल करतारपुर साहिब गुरुद्वारे तक भारतीय श्रद्धालुओं की पहुंच आसान बनाने के उद्देश्य से प्रस्तावित गलियारे का निर्माण दोनों देशों के बीच शांति बहाली का नया रास्ता खोलने वाला हो सकता है लेकिन गलियारे का शिलान्यास करते समय पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान ने जिन बातों का जिक्र किया, उससे यह तो लगता है कि वह अपनी गरीबी और बदहाली से बाहर आने के लिए अच्छे संबंधों की दुहाई दे रहे हैं लेकिन इमरान अपने भाषणों में जैसा प्रदर्शित कर रहे हैं, पाकिस्तान अपने व्यवहार में वाकई ऐसा करने में सफल नहीं होता है। अगर इमरान खान का इरादा वाकई दोनों देशों में शांति स्थापना का है, तो उन्हें कम से कम ऐसे पवित्र मौके पर कश्मीर का पुराना पाकिस्तानी राग अलापने से बचना चाहिए था। उन्हें बताने की कोई जरूरत नहीं थी कि पाकिस्तान के लिए सिर्फ कश्मीर ही एकमात्र मसला है। पूरी दुनिया जानती है कि पाकिस्तान के लिए कश्मीर एकमात्र मसला है, जबकि भारत के लिए उससे बड़ा मसला आतंकवाद है। भारत जिस आतंकवाद से जूझ रहा है उसके कर्ता–धर्ता पाकिस्तान की जमीन पर न सिर्फ उग रहे हैं बल्कि, वहीं उनका पालन–पोषण भी किया जा रहा है। भारत ही नहीं, अंतरराष्ट्रीय आतंकी घटनाओं के तार भी पाकिस्तान से जुड़ते रहे हैं। पाकिस्तान आज कर्ज के जिस महाजाल में उलझा हुआ है उसके पीछे की बड़ी वजह विकास और नवनिर्माण नहीं, बल्कि वह नफरत है जिसे वह भारत के प्रति दिखाता रहा है। इसीलिए इमरान के इस कदम को संदेह की नजर से देखना स्वाभाविक है क्योंकि कश्मीर का मुद्दा उछालना और आतंकवाद का कोई जिक्र नहीं करना उनकी सबसे बड़ी कमजोरी को उजागर करने वाला है। ऐसी ही कमजोरी पाकिस्तान के सभी प्रधानमंत्रियों ने दिखाई है। पाक राजनीति में सेना और सत्ता दोनों की अहम भूमिका है और दोनों की ही मजबूती भारत के खिलाफ नफरत की राजनीति पर टिकी है। बदली परिस्थितियों में अमरीका का स्थान अब चीन ने ले लिया है। मौके–बेमौके चीन की चर्चा पाक प्रधानमंत्री की नई मजबूरी है। ऐसे में भारत को नसीहत देने से पहले अपने देश में मौजूद शांति के शत्रुओं से भिडने का जोखिम इमरान को उठाना चाहिए क्यों कि इमरान जब तक ऐसा जोखिम नहीं लेंगे, भारत उन पर कभी भरोसा नहीं कर सकेगा। वैसे भी पाकिस्तान आजतक भारत के साथ बेईमानी ही करता आ रहा है। हाफिज सईद, मसूद अजहर और दाऊद इब्राहीम जैसे पापियों को अपने घर में पालने वालों के मुंह से शांति की बातें अच्छी नहीं लगती हैं।

राष्ट्रीय उद्बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष
E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

सेना को और मजबूती के लिए होगी रक्षा सौदों की खरीदारी

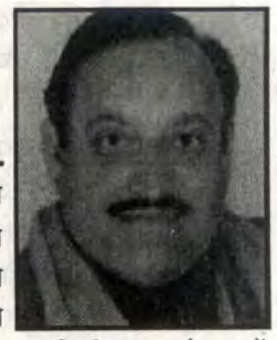

सेना को अधिक ताकतवर बनाने के लिए केंद्र सरकार ने अत्याधुनिक तकनीक वाले रक्षा सौदों की खरीद को मंजूरी दे दी है। ३००० करोड़ के इस रक्षा सौदे की खरीदारी के साथ ही दुनिया की सबसे ताकतवार सेनाओं में गिनी जाने वाली भारतीय सेना की ताकत कई गुना बढ़ जाएगी। केंद्र सरकार ने सशस्त्र सेनाओं के आधुनिकीकरण और उन्हें अत्याधुनिक रक्षा साजो–सामान से लैस करने की कड़ी में बड़ा कदम उठाया है। रक्षामंत्री निर्मला सीतारमण की अध्यक्षता में रक्षा खरीद परिषद (डीएसी) की बैठक में रक्षा बलों के लिए ३००० करोड़ रुपए से अधिक के उपकरण खरीद प्रस्तावों को मंजूरी दी गई। इस खरीद के तहत भारतीय नौसेना के दो जहाजों के लिए ब्रह्मोस मिसाइलें और थल सेना के युद्धक टैंक अर्जुन के लिए आर्मर्ड रिकवरी व्हीकल (एआरवी, बख्तरबंद वाहन) खरीदे जाएंगे। सुरक्षा मामलों की मंत्री मंडलीय समिति ने रूस में बनाए जाने वाले इन युद्धपोतों के लिए दो स्वदेशी ब्रह्मोस मिसाइल की खरीद को स्वीकृति दी। देश में ही बनी ब्रह्मोस मिसाइल पूरी तरह से जांची परखी सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल है और यह इन युद्धपोतों पर लगाई जाने वाली प्रमुख हथियार प्रणाली होगी। रक्षा खरीद परिषद ने सेना के प्रमुख यद्धक टैंक अर्जुन के लिए बख्तरबंद रिकवरी वाहनों की खरीद को भी मंजूरी दी है। रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) ने इन वाहनों का डिजाइन किया है। रक्षा क्षेत्र का सार्वजनिक उपक्रम भारत अर्थ मूवर्स लिमिटेड (बीईएमएल) इन वाहनों को बनाएगा। विभिन्न अभियानों और लड़ाई के दौरान ये वाहन महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। रक्षा खरीद के क्षेत्र में स्वदेशीकरण और आत्मनिर्भरता के लक्ष्य को हासिल करने के लिए, डीएसी ने आईडीडीएम खरीदें (भारतीय) वर्ग के तहत भारतीय वायु सेना के लिए १२ हाई पॉवर राडार की खरीद को अनुमति दी। ये राडार पैराबोलिक ट्रेजेक्ट्री के बाद हाई स्पीड टारगेट का पता लगाने एवं नजर रखने की क्षमता के साथ लंबी दूरी, मध्यम एवं उच्च उन्नतांश राडार कवर उपलब्ध कराएंगे। इन उपकरणों की खरीद देश में वायु रक्षा नेटवर्क की समग्र दक्षता को बढ़ाएगी।

राष्ट्रीय आह्वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

विश्वविद्यालयों से नहीं चलेंगी भारत विरोधी गतिविधियां

मोदी सरकार में केंद्रीय राज्य मंत्री जितेंद्र सिंह ने शिक्षण संस्थानों से सामने आई देशविरोधी गतिविधियों को लेकर कड़ी आपत्ति जताई है। मीडिया से बात करते हुए जितेंद्र सिंह ने कहा कि जेएनयू की घटनाओं और जम्मू–कश्मीर यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर द्वारा कथित तौर पर भगत सिंह को आतंकवादी कहने वाली घटनाओं को बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। इन घटनाओं का जिक्र करते हुए कहा कि यूनिवर्सिटी कैंपस को भारत विरोधी बैठकों के लिए एक मंच के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है, केन्द्रीय मंत्री ने कहा कि मैं व्यक्तिगत तौर पर स्वतंत्र विचारों और विचारधारों के पक्ष में हूं, लेकिन नीचे की पंक्ति में राष्ट्रीय अखंडता के लिए प्रतिबद्धता होनी चाहिए। हाल ही में जम्मू–कश्मीर यूनिवर्सिटी के एक प्रोफेसर मोहम्मद ताजुद्दीन ने क्लास में लेक्चर के दौरान भगत सिंह को आतंकी कह दिया था। मौके पर ही मौजूद छात्रों ने इसके खिलाफ सख्त आपत्ति जताई और शिकायत दर्ज कराई। हालांकि बाद में ताजुद्दीन ने खुद इस पर माफी मांगी थी। उन्होंने कहा था कि मैं खुद भगत सिंह को एक क्रांतिकारी मानता हूं, वह उन लोगों में से हैं जिन्होंने देश के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। फिलाहल इस पूरे मामले की जांच चल रही है, लेकिन मोहम्मद ताजुद्दीन को यूनिवर्सिटी से सस्पेंड कर दिया गया और प्रशासन ने कहा कि जब तक जांच पूरी नहीं हो जाती तब तक वो क्लास नहीं ले सकते। वहीं दूसरी तरफ जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी में भी दो साल पहले देशविरोधी नारेबाजी की गई थी। यूनिवर्सिटी कैंपस में संसद पर हमले के दोषी अफजल गुरु की बरसी मनाई गई थी। इस कार्यक्रम में वामपंथी विचारधारा के छात्र सम्मिलित थे जिनका उद्देश्य भारत की न्यायिक व्यवस्था पर चर्चा करना था। इसी कार्यक्रम में देश विरोधी नारेबाजी की गई थी, जिसकी जांच अभी तक चल रही है। इसके अलावा अभी हाल ही में अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में भी आतंकी बुरहान वानी की मौत के बाद, उसके लिए नमाज अदा की गई थी।

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

लौकी (घीया) एवं कद्दू के लाभ

नन्हकू प्रसाद यादव वैद्य

लौकी को गुजराती भाषा में दूधी, भोपाल तथा हिन्दी में लौकी, मीठी तुंबी, रामतरोई, घीया आदि नामों से जाना जाता है।

लौकी स्वास्थ्य की दृष्टि से बेहद उपयोगी है। लौकी का जूस, सलाद तथा हरी सब्जी के रूप में उपयोग होता है। क्षारीय खाद्य होने के कारण स्वास्थ्य रक्षण में इसकी अहम भूमिका है। अम्लता को दूर करती है। लौकी का रायता स्वाद एवं स्वास्थ्यकारक होता है। प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, वसा, जल, विटामिन 'बी' तथा आयरन, कैल्शियम, फास्फोरस आदि खनिज लवण पाये जाते हैं। लौकी मेधावर्धक, हृदय के लिए हितकारक, निद्रा कारक, कफ निस्तारक है। यह लाभदायक, दाह नाशक, गर्भ को पोषण देने तथा खांसी, टी.बी., रक्तपित्त इत्यादि अनिद्रा आदि मनोरोगों में इसका प्रयोग लाभकारी है।

सावधानी : लौकी को काटकर चखकर देखें यदि स्वाद कड़वा हो तो इसका सेवन नहीं करना चाहिए। कड़वे स्वाद वाली लौकी अत्यन्त हानिप्रद होती है। लौकी का स्वाद मीठा होना चाहिए।

मात्रा : (१) लौकी का स्वरस ५० से १२५ ग्राम।

(२) लौकी के पत्तों का रस १० से २५ ग्राम।

(३) लौकी के बीजों का चूर्ण ३ से ६ ग्राम।

उपयोग :

पीलिया में : (१) लौकी के पत्तों का रस २० ग्राम में २० ग्राम मिसरी मिलाकर ३ बार सेवन कराने से

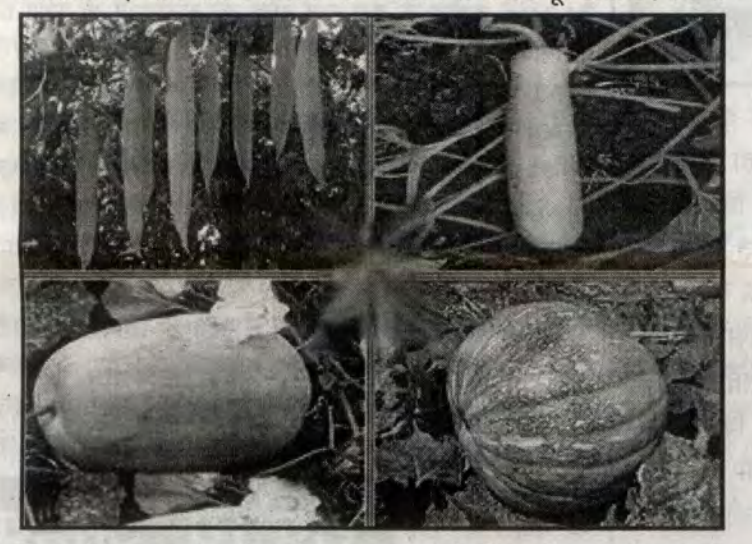

पित्त दोष का शमन होता है।

(२) लौकी को कंडे की आग में भूनकर उसका रस निकालें। १०० ग्राम रस में स्वादानुसार मिश्री घोलकर पीने से यकृत (लीवर) संबंधी रोगों का निवारण होता है। कम से कम यह प्रयोग २१ दिनों तक अवश्य करें। चाय, मिर्च–मसालों तथा खाद्य पदार्थों से परहेज रखना चाहिए। फलों का रस, दही तथा फलों का सेवन करना लाभप्रद होता है। हाथ–पैरों के तलवों में जलन होने पर–लौकी काटकर हाथ–पैरों के तलवों पर मलने से जलन दूर होती है। स्थायी लाभ के लिए बिना मिर्च मसालों से बनी लौकी की उबली सब्जी मात्र सेंधा नमक, जीरा, धनिया और हल्दी डालकर बनाएँ तथा चोकरयुक्त आटे की रोटी या दलिया के साथ इस सब्जी का सेवन नित्य करने से पूर्ण लाभ होता है।

संधिवात (आर्थराइटिस में)–रक्त में यूरिक एसिड बढ़ने से यह रोग होता है। लौकी को पीसकर संधिस्थल पर लेप कर धूप में बैठने से संधियों का दर्द मिटता है।

मुंहासे तथा झाइयाँ–लौकी के छिलकों को पीसकर पेस्ट बनाकर नित्य चेहरे पर लेप लगाएँ। एक–डेढ़ घंटा तक लेप लगा रहने दें, तत्पश्चात् ठंडे पानी से धो लें। यह प्रयोग १५–२० दिनों तक नित्य करें।

हृदय रोग में (उच्च रक्तचाप तथा हार्ट ब्लाकेज)–नये अनुसंधानों में पाया है कि लौकी का रस सेवन करने से हार्ट ब्लाकेज में लाभदायक होता है। लाखों रोगी इसका लाभ ले रहे हैं।

विधि– (१) मीठे स्वाद वाली लौकी को अच्छी तरह पानी से धो लें।

(२) अब लौकी को कसकर ग्राइंडर में या सिल–बट्टे पर पीस लें तथा सफेद सूती स्वच्छ कपड़े में रखकर निचोड़ लें।

(३) इस रस में ११ पत्ते तुलसी के तथा ७ पत्ते पुदीने के पीसकर रस मिला लें।

(४) निचोड़े हुए रस की मात्रा १२५ ग्राम होनी चाहिए। १२५ ग्राम पानी मिलाने से यह मात्रा २५० ग्राम हो जाती है। इस रस में ४–५ काली मिर्च पीसकर तथा २ ग्राम सेंधा नमक भी मिला देना चाहिए। यह एक मात्रा हुई।

उपरोक्तानुसार दिन में ३ बार चार–चार घंटे के अंतर से प्रातः खाली पेट, दोपहर भोजन के आधा घंटे पूर्व सेवन करना चाहिए।

अन्य सावधानियाँ–(१) जो भी औषधियाँ पहले से सेवन कर रहे हैं उन्हें बंद करें।

(२) तले हुए खाद्य पदार्थों से परहेज रखें।

(३) बिना मलाई का गाय का दूध या सोयाबीन का दूध पीना उत्तम है।

(४) तेल व घी का प्रयोग बंद रखें।

(५) सुबह–शाम क्षमतानुसार टहलना चाहिए।

(६) प्रातःकाल उठते ही एक गिलास पानी में आधा नींबू निचोड़ लेना चाहिए।

(७) अर्जुन चूर्ण की चाय बनाकर उसमें चीनी के साथ पर देशी खांड मिलाकर पीना चाहिए।

(८) सफेद नमक, सफेद चीनी से परहेज आवश्यक है। ये अम्लीय खाद्य हैं।

घर में तुलसी का पौधा लगाने से अलौकिक लाभ

१. २४ घंटे ऑक्सीजन मिलती है।

२. प्रेत योनि घर में प्रवेश नहीं करती हैं।

३. हानिकारक बैक्टीरिया घर में प्रवेश नहीं करते हैं।

४. जिस घर में विषैली गैस होती है, विषैली गैसों का प्रभाव *निष्क्रिय हो जाता है। (भोपाल* गैस कांड में ऐसा देखा गया है।)

५. आकाशी बिजली का प्रभाव नहीं होता है।

६. भूकम्प से बचाव होता है। (डा.डा.आर.एस. मिश्रा इलाहाबाद के द्वारा नेपाल में देखा गया है।)

७. जिस मन्दिर में तुलसी का पौधा हो, उसमें भूकम्प का असर नहीं होता है। (नेपाल में ऐसा देखा गया है।)

८. जिस घर में तुलसी की पूजा होती है उस घर में परिवार चलाने वाला आता है।

९. तुलसी की पूजा से असाध्य रोग नहीं होते हैं।

१०. तुलसी दर्शन से ब्रह्म हत्या जैसे पाप भी नष्ट हो जाते हैं।

११. हजारों पौधे लगाने से जो लाभ मिलता है वह लाभ तुलसी लगाने से मिलता है।

१२. कार्तिक मास में दीपक जलाने से घर में संतान की वृद्धि होती है।

१३. श्रवण भाद्र पक्ष में भगवान विष्णु का तुलसी मंजरी चंदन अर्पित करने से मृत्यु के पश्चात विष्णु लोक को जाते हैं।

१४. दूध चढ़ाने से स्थिर लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

१५. तुलसी मृत्तिका को माथे पर लगाने से तेजस्विता बढ़ती है।

१६. तुलसी युक्त जल से स्नान करते समय, 'ओम नमो भगवते वासुदेवाय नमः' के जाप से प्रेत बाधा से मुक्ति मिलती है।

१७. तुलसी के आठ नाम–१. वृन्दा, २. वृन्दावनी, ३. विश्वपावनी, ४. विश्व पूणिता, ५. सारानन्दनी, ६. तुलसी, ७. रामा, ८. श्यमा

१८. इनकी छाया में श्राद्ध करने से पितरों को अक्षत तृप्ति मिलती है।

१९. हिन्दू धर्म में तुलसी होना

शोभा, संस्कार, पवित्रता तथा धार्मिकता का प्रतीक है।

२०. इन्हें आरोग्य लक्ष्मी भी कहते हैं।

२१. जिस घर में तुलसी का पौधा होता है वह घर तीर्थ के समान है।

२२. जिस घर में तुलसी का पौधा होता है वहाँ यमदूत भी नहीं जा सकते हैं। मामूली राक्षसों की बात ही क्या है। (गरूड़ पुराण)

२३. तुलसी के मूल में ब्रह्मा, मध्य भाग में विष्णु तथा ऊपरी मंजरी में महादेव रहते हैं।

२४. तुलसी से निरन्तर बहने वाली प्राण वायु को औषधि समान समझें। (अज्ञात)

२५. तुलसी का निरादर करने वाले को एक दिन प्रायश्चित करना पड़ता है। (अंग्रेजों के साथ हुआ था (गौ सुशामा)

२६. अंग्रेजों ने मुम्बई में विक्टोरिया संग्रहालय जहाँ बनाया वहाँ मलेरिया के मच्छर बहुत थे। जिससे सभी राज मिस्त्री व मजदूर बीमार हो जाते तो वहाँ तुलसी बाड़ लगा देने से राज मिस्त्री व मजदूर को बुखार आना बंद हो गया और वह स्थान मलेरिया से मुक्त हो गया। (सर जॉर्ज वर्डवुड)

२७. **तुलसी गंध मादाय यत्र गच्छन्ति मारूताः। दिशो दशष्च पूतास्तुर्भूत ग्राम स्व्वतुर्विधः।।**

अर्थात्–तुलसी की गंध वायु के साथ जितनी दूर तक जाती है वहाँ का वातावरण और निवास करने वाले सब पवित्र, निर्विकार हो जाते हैं।

२८. गंगा और भागीरथी की तरह तुलसी पवित्र है और स्वर्ग दायिनी हैं। (...मत्स्य पुराण)

२९. परिवार के लोगों में प्रतिकूलता आ जाए धीरे–धीरे वह प्रतिकूलता पॉजिटिव में बदल जाती है।

जल जिसका विकल्प नहीं

रश्मि अग्रवाल

जी हाँ २५ वर्ष हो गये हैं, २२ मार्च (जल दिवस) के रूप में मनाते हुए। इसका उद्देश्य भी यही था कि इस दिवस से सीख लेकर अपने अस्तित्व के लिए जल का अस्तित्व बना रहे क्योंकि जुलाई २०१० में संयुक्त राष्ट्रसभा ने एक प्रस्ताव पारित करके विश्व के प्रत्येक व्यक्ति को पानी का अधिकार दिया। इसके अन्तर्गत प्रत्येक व्यक्ति को अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु पर्याप्त मात्र में पानी मिलना चाहिए। इसके लिए प्रति व्यक्ति प्रतिदिन के लिए लगभग ५० से १०० लीटर पानी का मानक निश्चित किया गया है। यह पानी स्वच्छ, स्वीकार्य व सस्ता भी होना चाहिए। परिवार की आये के तीन फीसद से अधिक पानी की कीमत नहीं होनी चाहिए, पानी के स्रोत व्यक्ति के घर से १००० मीटर से अधिक दूर नहीं होना चाहिए, पानी एकत्र करने हेतु ३० मिनट से अधिक का समय नहीं लगना चाहिए। पर क्या आज के परिवेश में ये अधिकार मिल रहे हैं? कदापि नहीं क्योंकि आज जल की स्थिति इतनी चिंताजनक है कि वैज्ञानिक हों यो शोधकर्ता, इसे ग्लोबल वार्मिंग से भी अधिक गंभीर विषय मान रहे हैं। पर क्या कोसने से या वैज्ञानिक परिदृश्यों पर नजर डालने भर से पानी की कमी दूर हो सकती हो तो, खूब कोसिए कि सरकारें काम नहीं कर रही हैं, व्यवस्था खराब है पर हकीकत यह है कि पानी की कमी न कोसने से, न रोने–चिल्लाने से न प्रत्येक वर्ष जल दिवस मनाने से दूर हो सकती है और ऐसा भी नहीं है कि जल समस्या से जनता अनभिज्ञ है। दुनिया में बढ़ते जल संकट के बीच कई लोग यह मर्म समझते हैं

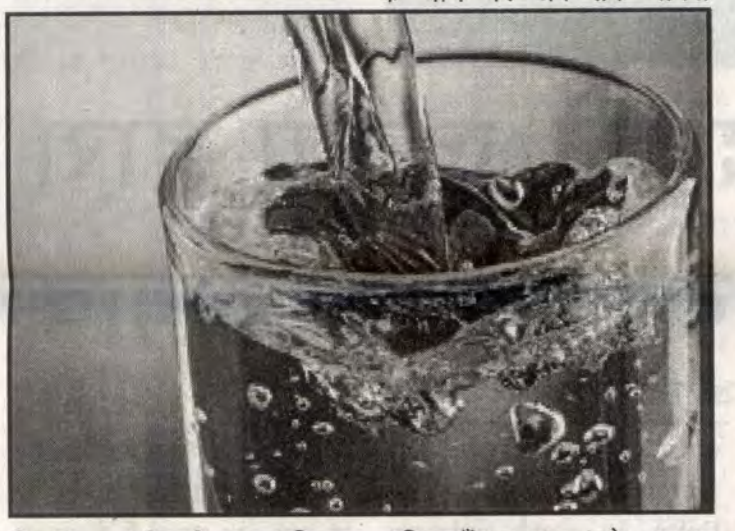

कि इस कीमती प्राकृतिक संसाधन का रखरखाव बहुत आवश्यक है। इसके नागरिक, कारोबारी, संस्थाएँ, समाज और देश सम्मलित हैं। इन्हें भविष्य की चिंता सताती है क्या?

हम इस मुगालते में भी न रहें कि वोट या नोट कभी हमें पानी पिला सकते हैं। वोट पानी पिला सकता, तो सबसे अधिक वोट वाले उत्तर प्रदेश के बाँदा, महोबा, हमीरपुर में पानी के लिए आत्महत्याएँ कभी न होतीं। यदि नोट से पानी मिल पाता, तो पानी के नाम पर अब तक सबसे अधिक बाँध व वजट वाले महाराष्ट्र में आला दरजे के माननीय का जल संकट का शर्मनाक बयान न आता। यदि कोई कहे कि वह कच्छ, चेन्नई और कलपक्कम की तरह करोड़ों फेंककर खारे समुद्री पानी को मीठा बनाने की महँगी तकनीक के बल पर सभी को पानी पिला देगा, तो यह सच्चाई से मुहँ फेर लेना है। सच्चाई तो यह है कि हमें हमारी आवश्यकताओं का कुल पानी न समुद्र पिला सकता है, न ही ग्लेशियर, न झीलें, न नदियाँ, न हवा, न मिट्टी की नमी। मीठे जल की हिस्सेदारी मात्र ०.३२५ प्रतिशत ही है। आज भी पीने योग्य सबसे अधिक पानी (१.६८) प्रतिशत धरती के नीचे भू–जल के रूप में ही मौजूद है। आज भी यदि हमें मरने से रोक सकता है तो वह मात्र बारिश की बूंदें। पानी की कमी से आत्महत्या का कोई पुराना इतिहास विश्व के किसी देश में शायद ही हो। महाराणा प्रताप के पास खाने को दाना भले ही नहीं था, लेकिन बेपानी वे भी नहीं मरे। आज महाराष्ट्र के गोदाम अनाज से भरे हैं, लेकिन बाँध खाली हैं। इस विरोधाभास का कोई कैसे भूल सकता है?

कहाँ–कहाँ की बात करें? वास्तविकता ये है कि पानी की समस्या और उससे जुड़ी जिम्मेदारी हम सभी की है क्योंकि हमने इसे हम प्रकार से उपयोग/उपभोग तो किया पर समझदारी से नहीं। जरा सोचिये वेा कल कैसा होगा? जब जल नहीं होगा। क्योंकि वर्तमान जल संकट को देखते हुए वे दबाव वलो क्षेत्र जो भारत में हैं वो जल की कमी वाले देश में परिवर्तित होने की दिशा में खड़े हैं। दुनिया के कई हिस्सों में पानी की मांग पहले से ही आपूर्ति से अधिक है और जैसे–जैसे विश्व में जनसंख्या में अभूतपूर्व दर से वृद्धि हो रही है और निकट भविष्य में असंतुलन का अनुभव बढ़ने की आशा है आज जल संसाधन की कमी, इसके अवनयन और इससे सम्बन्धित तनाव और संघर्ष विश्व राजनीति और राष्ट्रीय राजनीति में महत्वपूर्ण मुद्दे हैं।

आँकड़ों पर दृष्टि डालें तो बैंगलुरू, भारत में गैरनियोजित शहरीकरण और अतिक्रमण से यहाँ के जल निकायों में ७६ फीसदी कमी आ गई है। जबकि शहर का आकार १६७३ से अब तक ७७ फीसदी बढ़ा है। दो दशक तक जलस्तर ७६–६१ मीटर नीचे चला गया। ये समस्या पूरे विश्व की है। केपटाउन, कैलिफोर्निया से लेकर कोलकाता तक जैसे दुनिया में सैकड़ों ऐसे शहर हैं जहाँ इस संसाधन की गंभीर समस्या खड़ी हो चुकी है। माना जा रहा है कि आने वाले समय में दक्षिण अफ्रीका के इस समद्ध शहर के नल सूख सकते हैं क्योंकि केपटाउन में पानी इंद्रदेव की कृपा पर मिलता है। इनके ६ जलाशय वर्षा के जल से भरते हैं। लेकिन २०१५ के पश्चात् जलवायु परिवर्तन के कारण यहाँ वर्षा में कमी होने से ये जलाशय रिक्त रह गये। ये ही नहीं पर्यावरण से जुड़ी डाउन टू अर्थ पत्रिका का एक अध्ययन बताता है कि विश्व के कम से कम २०० शहर ऐसी विकट परिस्थिति से जूझ रहे हैं।

वर्तमान की बात करें तो जल का प्रबंधन और वितरण सबसे प्रमुख हो गया है। लोगों के सरकारी तंत्र पर आश्रित होने के चलते जल प्रबंधन में सामुदरियक हिस्सेदारी का पतन हो गया। परिणाम स्वरूप सदियों से देश में चली आ रही वर्षा जल संरक्षण परम्पर का खात्मा हो गया। जबकि पंच तत्वों में सम्मलित जल सबसे अनमोल प्राकृतिक संसाधन है क्योंकि पानी का कोई विकल्प है ही नहीं, इसके बिना जीवन संभव भी नहीं। आज बरसात की कीमत प्रेमियों और कवियों से अधिक सरकार को समझने की जरूरत है। जबकि हमारी धरती के गर्भ में इतनी जगह है कि इसके २१४ अरब घनमीटर जल आ जाए। फिर अपनी जरूरत के अनुसार इसमें से हम १६० अरब घनमीटर वापस निकाल भी सकते हैं। सरकार स्वयं मानती है कि मानसून के दौरान नष्ट हो जाने वाले ३६ अरब घनमीटर पानी को तो सरलता से धरती में एकत्र किया जा सकता है। उधर सरकारी कहानी के अनुसार पिछले २० वर्षो के अन्तर्गत कागजों पर जो काम हुए हैं, उन्हें सही मान लिया जाए और यह भी मान लिया जाए कि वे आज भी अपनी सौ फीसदी क्षमता से चल रहे हैं तो इनमें कुछ जमा १०–१५ करोड़ घनमीटर पानी ही बचेगा। लक्ष्य के मुकाबले यह आँकड़ा कहाँ है? कहने को वर्षो पहले ही केन्द्रीय भू–जल बोर्ड ने देश में

शेष पृष्ठ 11 पर

गांधी की अंहिसा में आंतकवाद से लड़ने की ताकत

प्रतिक्रिया : अखबारों में तथा टी० वी० के विभिन्न चैनलों में, मनाई गई जयन्ती को १४६ वीं भी कहा जा रहा है और १५० वीं भी।

- सही क्या है, पता नहीं।
- पूरे जिले में, उनके विचारों को सराहा गया और उनके दिखाए गए मार्ग पर ही चलने का आव्हान किया गया।

परिणाम क्या रहा?

- १६४७ में देश विभाजित हो गया। 3/¼ लाख वर्ग मील भूमि दी गई।
- मुस्लिम आबादी भी एक समस्या है। हालात १६४७ जैसे हो चुके हैं।
- ३०८ जिले २५ प्रतिशत आबादी के आधार पर अल्पसंख्यक बहुल जिले मोदी सरकार ने घोषित किए हैं।
- अल्पसंख्यक वाद को मजबूत करने में और हिन्दू की उपेक्षा करने में सभी दलों में जबर्दस्त होड़ लगी हुई है।
- १६४७ से कश्मीर घाटी में अशान्ति चल रही है।
- नागालैण्ड–मेघालय–मिजोरम नाम के तीन ईसाई राज्य बनवा दिए गए हैं। धर्मान्तरित ईसाईयों को गोभक्षक बना दिया गया है।
- हिन्दू हताश होकर आत्म हत्या कर रहा है।
- गांधी की अंहिसा में न तो आतंकवाद–नक्सलवाद से लड़ने की ताकत है और न ही किसी समस्या का समाधान।
- पटेल के नाम पर वोट मांग कर जीते थे किन्तु अब गांधी का गुणगान कर रहे है। यह परिवर्तन क्यों?
- ७१ वर्षों में हिन्दू का प्रतिशत ८८ से घटकर ८० रह गया है।
- २ करोड़ घुसपैठिए देश के वोटर बन गए हैं। वे कैसे निकलेंगे?
- चालीस हजार म्यांमारी रोहिंग्या मुस्लिम जम्मू–पूर्वोत्तर –केरल में अवैध रूप से बस गए हैं। फारुख कहते हैं कि जिसे कहीं जगह न मिले वह भारत में आकर बस जाए क्योंकि हमें बसाने की आदत और विशेषता है।

निष्कर्ष

- दुखी होकर कहना पड़ रहा है कि यदि हिन्दू सावरकरवादी नहीं बना तो उसे भगवान भी नहीं बचा पाएगा और उसका नाश निश्चित लग रहा है।

सतीश चन्द गोयल

हैदराबाद की जनता द्वारा इत्तेहाद को करारा जवाब

✍ डॉ. चन्द्रशेखर लोखण्डे

इत्तेहादुल का उदय- मुसलमानों को धार्मिक और सामाजिक रूप से संगठित करने के लिए 'इत्तेहादुल मुसल्मिन' संस्था की स्थापना सन् १९२७ में हुई। हैदराबाद के सातवें निजाम मीर उस्मान अली खाँ एक बार नवाब बहादुर यार जंग का भाषण सुनने के लिए चले गये। नवाब साहब एक प्रभावी वक्ता के रूप में जाने जाते थे। इस व्याख्यान को सुनकर निजाम इतने खुश हुए कि उन्होंने 'नवाब बहादुर' का खिताब तंग साहब को बहाल किया तथा रियासत में इत्तेहाद की शाखाएँ खोलने के लिए हर तरह की मदद देने का ऐलान कर दिया। नवाब बहादुर यार जंग को व्यक्तिगत तनखा भी मुकर्रर की गयी और इस संस्था के अन्तर्गत इस्लाम के धर्म प्रचारकों एवं मुल्ला मौलवियों को भी 'अमूरे मजहबी' के माध्यम से मासिक तनखाएँ दी जाने लगी। सन् १९२७ को १५ लोगों की कार्यकारणी में नवाब बहादुर यार जंग को इत्तेहादुल मुसल्मिन का सदर (अध्यक्ष) चुना गया। इससे पूर्व नवाब बहादुर यार जंग ने निजी तौर पर रियासत में तबलीग (धर्मोतर) कार्य अपने बलबूते पर शुरू किया था। १९२७ के बाद जंग साहब को इस कार्य में निजाम साहब का भी सहयोग मिलने लगा। सन् १९३६ के बाद यही इत्तेहादुल मुसल्मिन संस्था राजनीतिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए काम करने लगी। सन् १९४० के बाद इसी संस्था के सदस्य 'रजाकार' बनकर सारी रियासत का मजहबी माहौल बिगाड़ने लगे।

धर्मान्तरण की शुरुआत- नवाब बहादुर यार जंग ने हैदराबाद के पिछड़े इलाकों में घूम–घूमकर दलित, पिछड़ों और निर्धन हिंदुओं के धर्मान्तरण की मुहीम चलाई। नलगोंडा, तेलंगाना के कई इलाकों, निजामाबाद तथा मराठवाड़ा के गेवराई, बीड़, माजलगाँव केडा, धारूर आदि पिछड़े इलाकों में लगभग ३० हजार हरिजनों एवं निर्धनों का इन्होंने धर्मान्तरण किया। इस कार्य में सरकारी अधिकारियों एवं 'अमूरे मजहबी' के अधिकारियों का भी बड़ा हाथ रहा। १९२० से जब सातवें निजाम ने होश संभाला तब ही से हैदराबाद राज्य को मुस्लिम बहुल बनाने का बीड़ा उठाया था। इसके लिए उसने खाकसार पार्टी और इत्तेहादुल जैसी कट्टर परस्त संस्थाओं की मदद लेना प्रारम्भ कर दिया था और बड़े ही गुप्त तरीके से तबलीग (धर्मान्तर) का कार्य राज्य में शुरू कर दिया था। नवाब बहादुर यार जंग ने सन् १९३६ में निजाम सरकार को यह जतलाया था कि तबलीग के कार्यों की गतिविधियाँ शाया करने से धर्मांतरण के कार्यों में रुकावटें आती हैं। इसलिए ऐसी खबरें अखबारों में न छापी जायें। जब कोई सत्ता चाहे प्रजासत्ताक हो अथवा हुकुमशाही हो, धर्मों के आधार पर शासन व्यवस्था चलाती हो तो वह स्थायी नहीं होती और अन्त में नष्ट हो जाती है। १९४६ के बाद जब भारत में हैदराबाद को ब्रिटिश हिन्दुस्तान में शामिल करने का प्रश्न आया तब तो निजाम सरकार ने बिहार, उत्तर प्रदेश और पाकिस्तान से मुसलमानों को लाकर बसाने की जोरदार योजना बनायी और उसे क्रियान्वित भी किया। इन मुंहाजिरों को बसाने के लिए उन इलाकों के हिन्दुओं को ब्रिटिश भारत में खदेड़ना शुरू कर दिया। हजारों पीढ़ियों से रहने वाले हिंदुओं को रियासत से निकालने के लिए निजाम सरकार ने इत्तेहादुल के सदस्य और रजाकारों का भरपूर सहयोग लिया।

आर्यसमाज ने करारा जवाब दिया- नवाब बहादुर यार जंग ने मराठवाड़ा और तेलंगाना के पिछड़े इलाकों में घूम–घूमकर हिन्दुओं को मुस्लिम बनाया। स्वमी रामानन्द तीर्थ स्टेट कांग्रेस के अध्वर्यु कहते हैं कि "दलित और निर्धन हिन्दुओं को डरा–धमकाकर मुस्लिम बनाने की प्रक्रिया जेल और जेल के बाहर वे रोक टोक चालू थी।" स्कूलों में भी गरीब बच्चों के धर्मांतरण की खुली छूट दे रखी थी। ऐसे मुल्ला मौलवियों को आर्थिक मदद दी जाती थी। इत्तेहादुल मुसल्मिन और नवाब बहादुर यार जंग के नापाक इरादों को चकनाचूर किया आर्यसमाज के जाँबाज सिपाहियों ने। भारत के कांग्रेसी नेताओ ने इस ओर से आँखे मूँद ली कि यह उस रियासत का अंदरूनी मामला है और काँग्रेस इसमें दखल अन्दाजी नहीं करना चाहती और उसे गाँधीजी का समर्थन भी था। लेकिन आर्यसमाज आँख मूँदकर कैसे रह सकता है। पं. नरेन्द्रजी, पं. मनोहरलालजी, अँड. गंगाराम आर्य, अँ. विनायकराव विद्यालंकार, भाई श्यामलाल, भाई बंशीलाल आदि स्टेट काँग्रेस और आर्य समाज के नेताओं ने इसका जबरदस्त प्रत्युत्तर दिया। जहाँ–जहाँ बहादुर यार जंग जाकर दलितों, पिछड़ों का धर्म परिवर्तन करते उनके पीछे–पीछे जाकर पं. नरेन्द्र, पं. मनोहरलाल और अन्य साथी फिर से उनका शुद्धिकरण करते। मानो लुका छिपी का खेल, खेल रहे हों। जितनों का जंग साहब ने धर्मान्तरण किया उतनों को फिर से स्वधर्म में लाने का कार्य आर्य नेताओं ने किया। इस बारे में नवाब बहादुर यार जंग एक पब्लिक मिटिंग में कहते हैं कि–इस बालिशभर के नरेन्दर ने मेरा बना बनाया खेल बिगाड़ दिया है। इस मजमें में कोई ऐसा शख्स है जो उसका काम तमाम कर सके? उच्च न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति नरेन्द्र चपलगाँवकर कहते हैं"३० हजार दलित मुस्लिमों का दोबारा धर्म परिवर्तन कर हिन्दू धर्म में फिर से पुनर्प्रवेशित करने का महान कार्य रियासत में आर्यसमाज के नेताओं ने बड़ी हिम्मत से किया।"

मदरसे एक सच्चाई यह भी

कहा जाता है कि बहुसंख्यक मदरसे खाड़ी देशों के वित्तपोषण से मुस्लिम नौनिहालों को कट्टरवादी और अलगाववादी विचारधारा की ओर धकेल रहे हैं। रिपोर्ट के अनुसार, केरल के कई मदरसों में बच्चों को गुप्त तरीके से वहाबीवाद, खलीफा और खिलाफत के उस वहाबी दर्शन का पाठ पढ़ा जा रहा है, जो विश्व में हिंसक रूप से इस्लामी शासन को स्थापित करना–मजहबी दायित्व बताता है। इसी विषाक्त

चिन्तन ने आई. एस. हिजबुल मुजाहिद्दीन, जैश–ए–मोहम्मद और लश्कर–ए–तैयबा जैसे खतरनाक आतंकी संगठनों को जन्म दिया है। स्टिंग ऑपरेशन में केरल स्थित पुल्लोरम्माल में एक ट्रस्ट की ओर से चलाये जा रहे मदरसे के मौलवी कहते दिख रहे है, 'खिलाफत ही आधार है और यह हमारे दिलों में है। यदि हम सार्वजनिक रूप पर इसकी बात करेंगे, तो समस्या होगी। आसपास रहनेवाले कई हिन्दू हमें आई. एस. के लोग कहना शुरू कर देंगे, इसलिए हम सीधे नहीं कहते। हम बच्चों के दिलों में इसे धीरे–धीरे बिठा रहे हैं। हमें कोई जल्दबाजी नहीं है: क्योंकि खिलाफत एक दिन में नहीं बनती।' स्टिंग ऑपरेशन में अन्य मदरसे का संचालक स्वीकार कर रहा है कि यहाँ आने वाले बच्चों को नियमित तौर पर जाकिर नाइक के भाषण के वीडियो दिखाये जाते हैं, जो केवल इस्लाम को एकमात्र सच्चा बताने और गैर–मुस्लिमों के मतान्तरण से सम्बन्धित होते है। चैनल की रिपोर्ट में यह भी फिर से पुष्ट हुआ है कि देश के अधिकतर मदरसों को दुबई, सऊदी, ओमान, कतर आदि खाड़ी देशों से हवाला के माध्यम से धन प्राप्त होता है। वहाबी दर्शन मूलतः हिंसक जिहाद का प्रमुख प्रोत्साहक है, जिसका बीजारोपण १३ वीं शताब्दी में इस्लामी चिन्तन इब्न–तैमिया के जीवनकाल में हो गया था। मध्यकाल में तैमिया ने ही जिहादी अवधारणा को नया स्वरूप दिया, जिसमें मुस्लिमों (इस्लाम मतान्तरित सहित) को भी निशाना बनाया जाने लगा। आज आई. एस. जैसे कुख्यात आतंकी संगठन उसी का अनुसरण कर रहे हैं।

तैमिया के दर्शन को पहले व्यापक स्वीकृति नहीं मिली, किन्तु १८ वीं शताब्दी में मुहम्मद इब्न–अब्द–अल्–वहाब ने उसके चिन्तन को न केवल अंगीकार किया; बल्कि उसके प्रसार के लिए सन् १७४४ में तत्कालीन सऊदी शासक मोहम्मद बिन सऊद से भी हाथ मिला लिया। उसी कालखण्ड से आज तक सऊदी अरब इसी कुत्सित व्यवस्था को अपना रहा है। यही कारण है कि मदरसों में इस विषाक्त और संकीर्ण दर्शन को प्राथमिकता देने के लिए खाड़ी देश पानी की तरह पैसा बहा रहे हैं। इस्लाम इब्राहीमी प्रेरित मजहब है। दोनों का विश्वास है कि उनकी मजहबी मान्यताओं के अनुसार स्वीकृत ईश्वर ही केवल एकमात्र सत्य है और बाकी सब पाखण्ड व ढोंग। मजहब के सच्चे अनुयायियों का कर्त्तव्य है कि वे अन्य सभी पूजा–पद्धतियों को नष्ट कर विधर्मियों को तलवार, छल, फरेब और प्रलोभन के माध्यम से मतान्तरण के लिए प्रेरित करें या शेष पृष्ठ 11 पर

राफेल सौदे का सच

राफेल का सच क्या है? कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी अलग–अलग ट्वीट में इस घोटाले के आकार के बारे में अलग–अलग बातें कर रहे हैं. १६ मार्च २०१८ को ट्वीट में उन्होंने कहा कि रक्षा मंत्री के झूठ का पर्दाफाश कर दिया है और अपनी रिपोर्ट में राफेल की कीमत बताई है. जिसके मुताबिक कतर को १३१६ करोड़, मोदी सरकार को १६७० करोड़ और मनमोहन सिंह सरकार को ५७० करोड़ रुपये में देने की बात है. राहुल के मुताबिक हर हवाई जहाज पर ११०० करोड़ रुपया ज्यादा दिया गया जो कि ३६ विमान के हिसाब से छत्तीस हजार करोड़ रुपया है जो रक्षा बजट का दस फीसदी है।

इसके बाद दूसरे ट्वीट में राहुल गांधी ने आरोप लगाया कि राफेल सौदे की वजह से सरकारी खजाने को चालीस हजार करोड़ रुपये का नुकसान हुआ. कुछ उन्होंने इसे ५८ हजार करोड़ रुपये का घोटाला बताया. हाल ही में उन्होंने अपने एक ट्वीट में इसे एक लाख तीस हजार करोड़ रुपये का घोटाला बताया।

सरकारी सूत्रों के मुताबिक यूपीए के वक्त राफेल का कोई सौदा हुआ ही नहीं। कीमतों की तुलना करने पर भी अगर सिर्फ हवा में उड़ने लायक लड़ाकू विमान की कीमत की बात करें, जिस पर कोई भी मारक हथियार, रडार या दूसरे आयुध सिस्टम नहीं लगे हैं, तो सबसे पहले यूपीए–एक के समय रफाल के सौदों पर चर्चा शुरू हुई जिसमें अकेले विमान की कीमत ५३८ करोड़ रुपये थी। मई २०१५ में यूपीए के लिए यही कीमत ७३७ करोड़ रुपये प्रति विमान होती जबकि एनडीए ने ६७० करोड़ रुपये में सौदा किया। सितंबर २०१६ में जब पहला विमान आएगा तब यूपीए के सौदे के हिसाब से कीमत ६३८ करोड़ रुपये होती जबकि एनडीए के सौदे के हिसाब से यह ७६४ करोड़ रुपये बैठेगी। सरकारी सूत्रों के अनुसार इसका निष्कर्ष यह निकलता है कि अकेले हवा में उड़ने लायक विमान को एनडीए ने यूपीए की तुलना में २० फीसदी कम दामों पर खरीदा है।

दूसरा आरोप है कि ३६ राफेल लड़ाकू विमानों का सौदा करते समय भारत की अपनी सरकारी कंपनी हिंदुस्तान एयरोन टिक्स लिमिटेड को नजरअंदाज कर दिया गया सरकारी सूत्रों के अनुसार दसां एविएशन और एचएएल के बीच बात नहीं बनी। दोनों पक्षों के बीच टेक्नॉलाजी ट्रांसफर एक बड़ा मुद्दा था। साथ ही दसां एविएशन भारत में बनने वाले १०८ लड़ाकू विमानों की गुणवत्ता नियंत्रण की जिम्मेदारी लेने को तैयार नहीं था। दसां एविएशन भारत में विमान बनाने के लिए तीन करोड़ मैन आवर का अंदाजा था तो वहीं एचएएल का आकलन इससे कहीं तीन गुना अधिक था जिससे कीमत कई गुना ज्यादा हो जाती। ऐसे अनसुलझे मुद्दों के चलते ही यह सौदा बरसों से लटका हुआ था।

तीसरा आरोप लगाया गया कि मोदी सरकार एचएएल की अनदेखी कर रही है। इस पर सरकारी सूत्रों का कहना है कि यूपीए के वक्त किए जा रहे सौदे में भी एचएएल को शामिल नहीं किया गया था। यूपीए के वक्त तैयार विमान खरीदने की बात थी और बाकियों को भारत में बनाने की। लाइसेंस लेकर बनाने में और टेक्नॉलाजी ट्रांसफर में फर्क है। भारत में बनाने से कीमत अधिक आती। यूपीए के वक्त भी एचएएल को लेकर चल रही बातचीत किसी नतीजे पर नहीं पहुंची थी। एचएएल को यूपीए के वक्त हर साल औसत तौर पर दस हजार करोड़ रुपये के ऑर्डर दिए गए। जबकि मोदी सरकार ने हर साल औसत २२ हजार करोड़ रुपये के ऑर्डर दिए। ८३ लाइट काम्बेट एयरक्राट बनाने का पचास हजार करोड़ का ऑर्डर भी मोदी सरकार ने एचएएल को दिया है, उनकी उत्पादन क्षमता बढ़ाने का प्रयास हो रहा है।

चौथा आरोप है कि मोदी सरकार ने अनिल अंबानी की कंपनी रिलायंस डिफेंस इंड्रस्ट्रीज की मदद की और इसे रफाल के निर्माता दसां एविएशन से आफसेट कांट्रेक्ट दिलवाया इस पर सरकारी सूत्रों का कहना है कि आफसेट का नियम यूपीए ने २००६ में बनाया था। आफसेट के लिए सिर्फ एक कंपनी नहीं है। दसां एविएशन के मुताबिक उसने ७२ भारतीय कंपनियों से करार किया है। छोटी बड़ी कंपनियों को तीन अरब यूरो से अधिक का काम मिलेगा। इससे रोजगार के नए अवसर मिलेंगे। जहां तक रिलायंस डिफेंस इंडस्ट्रीज का सवाल है सरकारी सूत्रों के अनुसार तब भी दसां एविएशन और रिलायंस के बीच करार हुआ था बाद में हुए समझौते के तहत रिलायंस इंफ्रास्ट्रक्चर के ५१ फीसदी और दसां एविएशन के ४६ फीसदी भागीदारी के साथ साझा उपक्रम बनाया गया। दसां और रिलायंस मिलकर नागपुर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के नजदीक मिहान एसईजेड में एक संयंत्र स्थापित कर रहे हैं। इसके लिए दसां एविएशन ने सौ मिलियन यूरो का निवेश किया है जो भारत में किसी एक जगह पर रक्षा के क्षेत्र में सबसे बड़ा निवेश है। वहां रफाल और फाल्कन विमानों के लिए फाइनल एसेंबली बनाई जाएगी।

विपक्ष में पीएम पद के दावेदार?

साल २०१६ के चुनाव से पहले ही प्रधानमंत्री कौन हो, इसको लेकर बहस तेज होती जा रही है। एनडीए की तरफ से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ही अगले प्रधानमंत्री होंगे मगर विपक्ष में इसको लेकर कई आवाजें हैं। सबसे पहले कांग्रेस कार्यसमिति ने प्रस्ताव पास कर कहा कि राहुल गांधी ही उनकी तरफ से प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार होंगे। मगर उसके बाद कांग्रेस के तरफ से इस पर थोड़ा संशोधन किया गया। अब कांग्रेस की तरफ से कहा जा रहा है कि अभी विपक्ष का लक्ष्य बीजेपी सरकार को हटाना है पहले ये काम हो जाए फिर आगे बढ़ा जाएगा। इसलिए कांग्रेस की तरफ से पीएम पद के दरवाजे खुले हुए हैं. यह भी कहा गया कि कांग्रेस को कोई भी व्यक्ति प्रधानमंत्री पद के लिए स्वीकार होगा मगर वो आरआरएस का या उसकी विचारधारा से प्रभावित नहीं होना चाहिए। राहुल गांधी की मानें तो २०१६ में कांग्रेस अपनी जीत के लिए आश्वस्त दिख रही है। कांग्रेस को लगता है कि उत्तर प्रदेश में सपा, बसपा और कांग्रेस यदि साथ–साथ हैं तो बीजेपी को काफी मुश्किल होगी।

गौरतलब है कि २०१४ में उत्तर प्रदेश के ८० सीटों में से ७० पर बीजेपी जीती थी। यही वजह है कि बीजेपी ने भी अपनी तैयारी कर रखी है और सूत्रों की मानें तो पार्टी उत्तर प्रदेश में बड़े पैमाने पर अपने सांसदों के टिकट काटने वाली है। राहुल यह भी मानते हैं कि यदि २०१६ में बीजेपी को २७० साटें नहीं मिलती हैं तो मोदी प्रधानमंत्री नहीं बन पाएंगे। यहां तक कि उनकी अपनी पार्टी भी मोदी को स्वीकार नहीं करेगी। राहुल यह भी मानते हैं कि उनके सहयोगी अब उन्हें छोड़ने लगे हैं। शायद उन्हें भनक लग रही है कि अगली बार बीजेपी अच्छा नहीं करेगी।

हाल ही में पीडीपी से बीजेपी अलग हो गई तो टीडीपी बीजेपी से और शिवसेना अकेले चुनाव लड़ने की घोषणा कर चुकी है। राहुल ने यह भी कहा कि वे किसी भी हालत में प्रधानमंत्री पद आरआरएस के लिए नहीं छोड़ेंगे। अब सबसे बड़ा सवाल उठता है कि यदि राहुल बाकी दलों को स्वीकार नहीं होंगे तो कौन होगा। सबसे पहले नाम आता है मायावती का, जो देश भर में एक दलित नेता के रूप में स्वीकार्य हैं। चार बार देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री रह चुकी हैं। प्रशासनिक अनुभव है, अफसरों से काम करवाना जानती हैं। मगर कुछ खामियां भी हैं मायावती के लिए, जैसे कि फिलहाल लोकसभा में उनका एक भी सदस्य नहीं है। इसलिए उन्हें २०१६ के लोकसभा चुनाव में काफी अच्छा करना पड़ेगा। और दूसरा, क्या वे गठबंधन को ठीक से चला पाएंगी। मगर यहां भी सवाल उठता है कि क्या कांग्रेस एक दलित को प्रधानमंत्री बनाएगी। हालांकि कांग्रेस दलित को राष्ट्रपति, चीफ जस्टिस और लोकसभा का अध्यक्ष बनावा चुकी है, अब बारी है प्रधानमंत्री की।

दूसरा चेहरा है ममता बनर्जी का जो पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री हैं। मजबूत पकड़ है सरकार पर, मगर क्या उन्हें सारे दल स्वीकार करेंगे और दिल्ली की राजनीति का उन्हें उतना अनुभव नहीं है। जो उनके मिजाज हैं, उसमें गठबंधन को चलाना उनके लिए आसान नहीं होगा। तीसरा सबसे बड़ा नाम है शरद पवार का। उनके पक्ष में जो बातें हैं उसमें है उनका भारतीय राजनीति का भरपूर अनुभव। मुख्यमंत्री और केन्द्रीय मंत्री के रूप में लंबा अनुभव। सबसे कम उम्र में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री बने। राजनीतिक जोड़तोड़ में माहिर हैं और हरेक पार्टी में उनके दोस्त हैं।

११ जून, १८६७ को एक साधारण परिवार में जन्म रामप्रसाद बिस्मिल स्वदेश को बन्धन मुक्त कराने हेतु भारतमाता के श्री चरणों में अपना जीवन प्रसून चढ़ाकर 'असाधारण' और प्रातःस्मरणीय प्रेरणा पुंज बन गए। उच्छृंखल अवस्था भी रही थी उनकी जीवनविधा! बाद में पूजा-पाठ और पौराणिकता की दिशा में वह आकृष्ट हुए। फिर आया था उनके जीवन में, वह मोड़ जब स्वामीदेव से दीक्षा ग्रहण कर इस आर्यसमाजी युवक ने जीवन पर्यन्त ब्रह्मचर्यत्व पालन का संकल्प लिया। लाहौर षड्यन्त्र में देवतास्वरूप भाई परमानन्द को मृत्यु दण्ड दिए जाने का समाचार पढ़कर उन्होंने क्रान्ति पथ का अनुगमन करते हुए 'जीवनभर अंग्रेजी राज्य को विध्वंस करने का प्रयत्न करूँगा' यह संकल्प ग्रहण किया। सन् १९२५ में वह ऐतिहासिक काकोरी षड्यंत्र में बन्दी बनाए गए और १९२७ में ६ अप्रैल को सेशन जज द्वारा फाँसी की सजा सुनाई गई। उसी वर्ष १९ दिसम्बर को प्रातः साढ़े छह बजे गोरखपुर जेल में हुआ था उनकी जीवन लीला का अन्त। भारत माता की जय और वन्देमातरम की जय के साथ उन्होंने चूमा था फाँसी का फंदा। उनकी जीवनयात्रा के अन्तिम चरण का प्रस्तुत है विवरण–

१९ दिसम्बर पुण्यतिथि पर

क्रान्तिकारी रामप्रसाद बिस्मिल

✍ डॉ. ईश्वरप्रसाद वर्मा

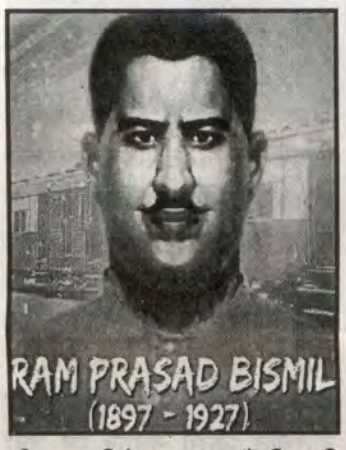

बिस्मिल ने स्वयं लिखा था–अन्तिम समय निकट है। **दो फाँसी की सजाएँ सिर पर झूल रही हैं। पुलिस को साधारण जीवन में और समाचार-पत्रों तथा पत्रिकाओं में खूब जी भरके कोसा है। खुली अदालत में जज साहब, खुफिया पुलिस के अफसर, मजिस्ट्रेट, सरकारी वकील तथा सरकार को खूब आड़े हाथों लिया है।** हरेक के दिल में मेरी बातें चुभ रही हैं। **कोई दोस्त आशना अथवा मददगार नहीं,** जिसका सहारा हो। एक परमपिता परमात्मा की याद है। गीता का पाठ करते हुए सन्तोष है कि–

जो कुछ किया सो तैं किया,
मैं कुछ कीन्हा नाहिं।
जहाँ कहीं कुछ मैं किया, तुम
ही थे मुझ माहिं।।
ब्रह्मन्याधाम कर्माणि संगम्
त्यक्त्वा करोति यः।
लिप्यते न स पापेभ्योः
पद्मपत्रमिवाम्भसः।।
(भगवद्गीता ५-१०)

अर्थात्–

"जो फल की इच्छा का त्याग करके कर्मों को ब्रह्म में अर्पण करके कर्म करता है, वह पाप से लिप्त नहीं होता, जिस प्रकार जल में रहकर भी कमल–पत्र जल में नहीं होता।"

उन्होंने जीवनपर्यन्त जो कुछ किया, स्वदेश की भलाई समझकर किया। यदि शरीर की पालना की, वह भी इसी विचार से कि सुदृढ़ शरीर से भली प्रकारर स्वदेश–सेवा हो सके। बड़े प्रयत्नों से यह शुभ दिन प्राप्त हुआ। **संयुक्त प्रान्त में इस तुच्छ शरीर का ही सौभाग्य होगा, जोसन् १८५७ ई. के गदर की घटनाओं के पश्चात् क्रान्तिकारी आन्दोलन के सम्बन्ध में इस प्रान्त के निवासी का पहला बलिदान मातृवेदी पर होगा।**

सरकार की इच्छा थी कि रामप्रसाद को घोंट-घोंट कर मारे। इसी कारण भयंकर गर्मी की ऋतु में साढ़े तीन महीने बाद अपील नियत की गई। साढ़े तीन महीने तक फाँसी की कोठरी में भूंजा गया। यह कोठरी पक्षी के पिंजरे से भी खराब थी।.... गोरखपुर जेल की फाँसी की कोठरी मैदान में बनी हुई थी। उस कोठरी के चारों ओर किसी प्रकार की छाया नहीं। सुबह आठ बजे से सायं सात बजे तक सूर्य देवता की कृपा से तथा चारों ओर रेतीली जमीन होने से आग ही आग बरसती थी। नौ फीट लम्बी तथा नौ फीट चौड़ी कोठरी में केवल छः फीट लम्बा और दो फीट चौड़ा एक दरवाजा। पीछे की तरफ जमीन से आठ या नौ फीट की ऊँचाई पर एक दो फीट लम्बी, एक फुट चौड़ी खिड़की। इसी कोठरी में भोजन, स्नान, मल-मूत्र त्याग तथा सोना बैठना था। मच्छर और कीट पतंगों का शोर रात भर होता, जिससे नींद नहीं आती। बड़ी कोशिशों के बाद रात में तीन-चार घंटे नींद आती और कभी-कभी यह भी नहीं। किसी-किसी दिन नींद उचट जाती तो एक-दो घण्टे ही सोकर गुजारा करना पड़ता था।.. मिट्टी के बर्तनों में भोजन दिया जाता था। ओढ़ने व बिछाने के लिए केवल दो ही कम्बल मिलते गर्मी के मौसम में जहाँ बाहर तथा अन्दर अग्नि-वर्षा होती हो, वहाँ गरम कम्बल को बिछाकर या उसका तकिया बनाकर लेटना कितनी भयंकर यातना हो सकती है, इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है।

यही सब सहन करना और प्रसन्न रहना, रामप्रसादजी की ही हिम्मत थी–**बड़े त्याग का जीवन था**–उन्हें ऐसा लग रहा था, **जैसे एक संन्यासी को साधना के लिए सब साधन एकत्रित कर जुटाए गए हों!...** मानो प्रत्येक क्षण उन्हें यह शिक्षा दे रहा हो–अन्तिम समय के लिए तैयार हो जाओ, परमात्मा का भजन करो–साधना करो।

उन्होंने लिखा–मुझे इस कोठरी में बड़ा आनन्द आ रहा है। **मेरी इच्छा थी कि किसी साधु की गुफा पर कुछ दिन निवास करके योगाभ्यास किया जाता। अन्तिम समय यह इच्छा भी पूर्ण हो गई।** इसी कोठरी में यह सुयोग प्राप्त हो गया कि कुछ अन्तिम बात लिखकर देशवासियों को अर्पण कर दूँ। सम्भव है कि मेरे जीवन के अध्ययन से किसी आत्मा का भला हो जाए। बड़ी कठिनता से यह शुभावसर प्राप्त हुआ–

महसूस हो रहे हैं वादे फना के झोंके।
खुलने लगे हैं मुझ पर असरार जिंदगी के।।
बारे अलम उठाया रंगे निशात् देखा।
आये नहीं हैं यूँ ही अन्दाज बेहिसी के।।

वफा कर दिल को सदके जान को नजरे जफा कर दे,
मुहब्बत में यह लाजिम है कि जो कुछ हो फिदा कर दे।

अब तो यही इच्छा है कि–

बहे बहरे फना में जल्द या रब लाश 'बिस्मिल' की।
कि भूखी मछलियाँ हैं जौहरे शमशीर कातिल की।।
समझकर फूँकना इसको जरा ऐ दागे नाकामी।
बहुत से घर भी हैं आबाद इस उजड़े हुए दिल से।।

सूखी पतझड़ की सरसराती हवा एक ऐसा भयावह वातावरण उत्पन्न कर रही थी जिससे स्वतः कलेजे में एक धकधकी–सी होती थी। **रात की हल्की फुहार से लगा, मानो आकाशवाणी हो गई कि 'कल' का दिन ऐतिहासिक दिन होगा**–और उसी आशंका से मानो आसमान भी रो पड़ा हो–पर कोई आवाज नहीं–शान्त, स्थिर!... सभी ओर सन्नाटा, कहीं जी नहीं लगता–दिल न मालूम क्यों उखड़ा–उखड़ा–सा लग रहा था। अकस्मात् लोहे की बड़ी–बड़ी सलाखों वाला गेट चरमराया। गेट के खुलते ही ड्यूटी पर तैनात सिपाहियों की चुस्ती एवं चमकदार बूटों की आवाज खट्–खट्... पर उनके चेहरे पर आज न मालूम क्यों एक संजीदगी, **एक मायूसी–लगा जैसे शरीर एक यंत्र से चल रहा है, उसमें आत्मा नहीं, जीवन का उत्साह नहीं।** एक अजीब–सी शान्ति... तभी... तभी! एक आवाज लगी–"पं. **रामप्रसाद बिस्मिल' से मिलने वाले इस कठघरे में आ जायें।"** कड़कती–सी आवाज। **पिता के पाँव लड़खड़ा गए–.....माँ के पैरों में तेजी आ गई–.....** उत्सुकता के साथ अश्रुधारा भी मुस्कराते चेहरे पर बह चली। कैसा मेल... विधाता की विधि का विधान...! कोल हृदय और आघात!

कदम चल रहे थे... चरमराते बूटों की निगरानी में–बन्दूकों की नोंक की सीध में.... स्थिर... सामान्य! **अन्तिम मिलन**–गोरखपुर की फाँसी की कोठरी का अन्तिम छोर! कदम एक 'खट्' की आवाज से रुके। दिल की धड़कन बढ़ने लगी... आँखें टकटकी बाँधे सामने की कोठरी के कुण्डे पर स्थित थीं। दरवाजा खुला.... **एक तेज सूर्य का प्रकाश.... एक तेजस्वी पुरुष के बाहर आते ही कोठरी में कौंध गया।...**

इधर... पहरेदारों ने फुर्ती से बूटों की 'खट' के साथ सलामी दी और खड़े हो गए।....

उधर....दोनों हाथ उठे–हाथ जोड़े और मुस्कराते हुए उस वीर, नरकेसरी ने **'नमस्कार'** कहा। पूछा–**"ठीक हो भैया!"** पर कोई उत्तर नहीं, केवल संकेत मात्र गर्दन के एक ओर झुक जाने से 'हाँ' हुई। आँखें निराशाजनक!!... पर उस तेजस्वी युवक के चेहरे पर मुस्कराहट वैसी ही विद्यमान रही। उसने जेब से एक फरमान निकाला, पढ़ा To be hanged by the neck till they be dead. (प्राण निकल जाने तक गले में फंदा डालकर लटका दिया जाए।)

ठहाके के साथ हँसी की आवाज ने सभी लोगों का ध्यान उस व्यक्ति की ओर अनायास आकृष्ट कर दिया–न मालूम क्यों... और कैसे सभी के उदास चेहरों पर मुस्कराहट दौड़ गई।

पिताजी के पैर छुए–उनका दिल भर आया–कितने ही पुराने घावों पर एक साथ ठेस लगी... बेटे को फाँसी लग जाएगी–वे सुबक पड़े। **"माँ... मेरी माँ" कहकर रामप्रसाद तेजी से उनके पैर छुए बिना उनके गले से लिपट रो पड़े।** किन्तु माँ की आँखों में आँसुओं का लेश भी न था। उन्होंने ऊँचे स्वर में कहा–**"मैं तो समझती थी कि मेरा बेटा बहादुर है, जिसके नाम से अंग्रेज सरकार भी काँपती है।** मुझे नहीं पता था कि वह मौत से डरता है। तुम्हें यदि रोकर ही मरना था तो व्यर्थ इस काम में आए।" बिस्मिल ने डरते हुए बड़ी श्रद्धा से कहा–**"ये आँसू मौत के डर के**

शेष पृष्ठ 10 पर

राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी

१७ दिसम्बर शहीद दिवस पर

राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी

भारत के स्वतंत्रता संग्राम के महत्त्वपूर्ण सेनानी थे। युवा क्रान्तिकारी लाहिड़ी की प्रसिद्धि काकोरी कांड के एक प्रमुख अभियुक्त के रूप में है।

जीवनी—बंगाल (आज का बांग्लादेश) में पबना जिले के अन्तर्गत मड़याँ (मोहनपुर) गाँव में २६ जून १६०१ के दिन क्षिति मोहन लाहिड़ी के, घर राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी का जन्म हुआ। उनकी माता का नाम बसन्त कुमारी था। उनके जन्म के समय पिता क्रान्तिकारी क्षिति मोहन लाहिड़ी व बड़े भाई बंगाल में चल रही अनुशीलन दल की गुप्त गतिविधियों में योगदान देने के आरोप में कारावास की सलाखों के पीछे कैद थे। दिल में राष्ट्र–प्रेम की चिंगारी लेकर मात्र नौ वर्ष की आयु में ही वे बंगाल से अपने मामा के घर वाराणसी पहुँचे।

वाराणसी में ही उनकी शिक्षा दीक्षा सम्पन्न हुई। काकोरी कांड के दौरान लाहिड़ी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में इतिहास विषय में एम.ए. (प्रथम वर्ष) के छात्र थे। १७ दिसम्बर १६२७ को गोंडा के जिला कारागार में अपने साथियों से दो दिन पहले उन्हें फाँसी दे दी गई। राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी को देश–प्रेम और निर्भीकता की भावना विरासत में मिली थी। राजेन्द्रनाथ काशी की धार्मिक नगरी में पढ़ाई करने गये थे किन्तु संयोगवश वहाँ पहले से ही निवास कर रहे सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी शचींद्रनाथ सान्याल के सम्पर्क में आ गये। राजेन्द्र की फौलादी दृढ़ता, देश–प्रेम और आजादी के प्रति दीवानगी के गुणों को पहचान कर शचीन दा ने उन्हें अपने साथ रखकर बनारस से निकलने वाली पत्रिका बंग वाणी के सम्पादन का दायित्व तो दिया ही, अनुशीलन समिति की वाराणसी शाखा के सशस्त्र विभाग का प्रभार भी सौंप दिया। उनकी कार्यकुशलता को देखते हुए उन्हें हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन की गुप्त बैठकों में आमंत्रित भी किया जाने लगा।

अध्ययन प्रेमी—पठन–पाठन की अत्यधिक रुचि तथा बांग्ला साहित्य के प्रति स्वाभाविक प्रेम के कारण लाहिड़ी ने अपने भाइयों के साथ मिलकर अपनी माता की स्मृति में बसंत कुमारी नाम का एक पारिवारिक पुस्तकालय स्थापित कर लिया था। काकोरी काण्ड में गिरफ्तारी के समय ये काशी हिंदू विश्वविद्यालय की बांग्ला साहित्य परिषद के मंत्री थे। इनके लेख बांग्ला के बंगवाणी और शंख आदि पत्रों में छपा करते थे। लाहिड़ी ही बनारस के क्रांतिकारियों के हस्तलिखित पत्र अग्रदूत के प्रवर्तक थे। इनका लगातार यह प्रयास रहता था कि क्रांतिकारी दल का प्रत्येक सदस्य अपने विचारों को लेख के रूप में दर्ज करे।

काकोरी काण्ड—क्रान्तिकारियों द्वारा चलाये जा रहे स्वतंत्रता–आंदोलन को गति देने के लिए धन की तत्काल व्यवस्था को देखते हुए शाहजहाँपुर में दल के सामरिक विभाग के प्रमुख पण्डित रामप्रसाद 'बिस्मिल' के निवास पर हुई बैठक में राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी भी सम्मिलित हुए जिसमें सभी क्रान्तिकारियों ने एकमत से अंग्रेजी सरकार का खजाना लूटने की योजना को अंतिम रूप दिया था। इस योजना में लाहिड़ी का अहम किरदार था क्योंकि उन्होंने ही अशफाक उल्ला खाँ के ट्रेन न लूटने के प्रस्ताव को सिरे से खारिज कर दिया था, जिसके परिणामस्वरूप अशफाक ने अपना प्रस्ताव वापस ले लिया था।

इस योजना को अंजाम देने के लिए लाहिड़ी ने काकोरी से ट्रेन छूटते ही जंजीर खींच कर उसे रोक लिया और ६ अगस्त १६२५ की शाम सहारनपुर से चलकर लखनऊ पहुँचने वाली आठ डाउन ट्रेन पर क्रान्तिकारी पण्डित रामप्रसाद 'बिस्मिल' ने अशफाक उल्ला खाँ और चन्द्रशेखर आजाद व ६ अन्य सहयोगियों की मदद से धावा बोल दिया। कुल १० नवयुवकों ने मिलकर ट्रेन में जा रहा सरकारी खजाना लूट लिया। मजे की बात यह कि उसी ट्रेन में सफर कर रहे अंग्रेज सैनिकों तक की हिम्मत न हुई कि वे मुकाबला करने को आगे आते।

काकोरी काण्ड के बाद बिस्मिल ने लाहिड़ी को बम बनाने का प्रशिक्षण लेने बंगाल भेज दिया। राजेन्द्र बाबू कलकत्ता गये और वहाँ से कुछ दूर स्थित दक्षिणेश्वर में उन्होंने बम बनाने का सामान इकट्ठा किया। अभी वे पूरी तरह से प्रशिक्षित भी न हो पाये थे कि किसी साथी की असावधानी से एक बम फट गया और बम का धमाका सुनकर पुलिस आ गई। कुल ६ साथियों के साथ राजेन्द्र भी गिरफ्तार हो गये। उन पर मुकदमा दायर किया गया और १० वर्ष की सजा हुई जो अपील करने पर ५ वर्ष कर दी गई। बाद में ब्रिटिश राज ने दल के सभी प्रमुख क्रान्तिकारियों पर काकोरी काण्ड के नाम से मुकदमा दायर करते हुए सभी पर सम्राट के विरूद्ध सशस्त्र युद्ध छेड़ने तथा खजाना लूटने का न केवल आरोप लगाया बल्कि झूठी गवाहियाँव मनगढ़न्त प्रमाण पेश कर उसे सही साबित भी कर दिखाया। राजेन्द्र लाहिड़ी को काकोरी काण्ड में शामिल करने के लिए बंगाल से लखनऊ लाया गया। तमाम अपीलों व दलीलों के बावजूद सरकार टस से मस न हुई और अन्ततः राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी, पण्डित रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खाँ तथा ठाकुर रोशन सिंह—एक साथ चार व्यक्तिया को फाँसी की सजा सुना दी गई। लाहिड़ी को अन्य क्रान्तिकारियों से दो दिन पूर्व १७ दिसम्बर को ही फाँसी दे दी गई। आजादी के इस दीवाने ने हँसते–हँसते फाँसी-फन्दा चूमने से पहले वंदे मातरम् की हुंकार भरते हुए कहा था—'मैं मर नहीं रहा हूँ, बल्कि स्वतंत्र भारत में पुनर्जन्म लेने जा रहा हूँ।'

लाहिड़ी दिवस—राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी को उत्तर प्रदेश के गोंडा जिले में एक क्रान्तिकारी महानायक का स्थान प्राप्त है। प्रतिवर्ष १७ दिसम्बर स्थानीय जिला प्रशासन के लिए राजकीय महत्त्व का दिवस होता है। इस दिन जिले के समस्त विद्यालयों एवं प्रशासनिक प्रतिष्ठानों में राजकीय उत्सव का माहौल रहता है। सभी सम्बद्ध प्रतिष्ठानों में शहीद लाहिड़ी के सम्मान में सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। इन समस्त सांस्कृतिक आयोजनों का केन्द्र बिन्दु गोंडा का जिला कारागार होता है। कारागार के फाँसीघर में स्थापित लाहिड़ी की प्रतिमा के समक्ष यज्ञ का आयोजन किया जाता है। फाँसी के दिन भी सुबह–सुबह लाहिड़ी व्यायाम कर रहे थे। जेलर ने पूछा कि मरने के पहले व्यायाम का क्या प्रयोजन है? लाहिड़ी ने निर्वेद भाव से उत्तर दिया—'जेलर साब! चूँकि मैं हिन्दू हूँ और

शेष पृष्ठ 11 पर

संघ ने सरकार को दी चेतावनी

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रमुख मोहन भागवत ने सरकार को चेतावनी देते हुए कहा कि धैर्य का समय अब खत्म हुआ और अगर उत्तर प्रदेश के अयोध्या में राम मंदिर निर्माण का मामला उच्चतम न्यायालय की प्राथमिकता में नहीं है तो मंदिर निर्माण कार्य के लिये कानून लाना चाहिए। राम मंदिर निर्माण के मुद्दे पर विश्व हिंदू परिषद की रैली में भागवत ने कहा कि यह "आंदोलन का निर्णायक चरण है। उन्होंने कहा कि एक साल पहले मैंने कहा था कि धैर्य रखें। अब मैं ही कह रहा हूं कि धैर्य से काम नहीं होगा। अब हमें लोगों को एकजुट करने की जरूरत है। अब हमें कानून की मांग करनी चाहिए। भागवत ने कहा कि चाहे जो भी कारण हो क्योंकि अदालत के पास समय नहीं है या राम मंदिर मामला उनकी प्राथमिकता में नहीं है अथवा संभवतरू वह समाज की संवेदनशीलता को नहीं समझ पा रही है। ऐसे में सरकार को चाहिए कि वह इस बारे में विचारे कि मंदिर निर्माण के लिये कैसे एक कानून लाया जाये। कानून जल्द से जल्द लाया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि अब यह आंदोलन का निर्णायक चरण है। भागवत ने कहा कि अयोध्या में राम मंदिर बनाने के लिए हिंदुओं को हिंसा करने की जरूरत नहीं है। लेकिन उन्हें दृढ़ होना चाहिए कि सरकार इसके लिए कानून बनाए। भागवत ने यहां विश्व हिंदू परिषद की धर्म सभा में कहा कि हमें ऐसा माहौल बनाना होगा कि सरकार को अब मंदिर बनाना चाहिए। हमें अब सरकार से इसके लिए कानून बनाने की मांग करनी है इसके लिए हमें सरकार पर दवाब बनाने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि अगर सरकार मंदिर बनाना चाहती है और नहीं बना पा रही है तो जनता के दवाब से उसे शक्ति मिलती है। मंदिर के निर्माण का राजनीति से कोई संबंध नहीं है। उन्होंने कहा कि इसका राजनीति से कोई संबंध नहीं है। हमें एक भव्य राम मंदिर की जरूरत है यह बिल्कुल वैसे बनना चाहिए जैसा हमने सोचा है। यह उन्हीं हाथों से बनना चाहिए जिन्होंने इसे ८० के दशक में बनाने का प्रयास किया था। इसके लिए हमें पूरे समाज को जुटाना होगा। उन्होंने कहा कि समाज कानून के अनुसार नहीं बल्कि मन के अनुसार चलेगा।उन्होंने कहा कि दुनिया में हर जगह ऐसा ही है।कानून को इसे समझने की जरूरत है, वहीं समाज कानून का सम्मान करता है।उन्होंने कहा कि सर्वोच्च न्यायालय ने कहा है कि राम मंदिर का निर्माण उसकी प्राथमिकता नहीं है. अदालत ने २०१० में निर्णय किया था कि भगवान राम का जन्म वहां हुआ था।यह उनका स्थान है। तब एक उम्मीद जागी थी कि राम मंदिर का निर्माण होगा। लेकिन मामला एक नई पीठ के पास चला गया जिसने इसे फिर आगे बढ़ा दिया गया। उधर उद्धव ठाकरे पहली बार अयोध्या पहुंचे। जिसको लेकर राम नगरी किले में तब्दील कर दिया गया। शिवसैनिकों का जमावड़ा लगा। अयोध्या में धर्म सभा से बीजेपी विधायक ने बोला कि जरूरत पड़ी तो संविधान ताक पर रखकर १६६२ का इतिहास दोहराया जा सकता है।

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

एक संत का शंखनाद्

भारत का मूल भूमि पुत्र हिन्दू अपनी ही मातृभुमि में बढ़ती हुई मुस्लिम जनसंख्या के दबाव में लोकतांत्रिक व्यवस्था के कारण राष्ट्र की राजनीति में अप्रसांगिक व अप्रभावित होता जा रहा है। बहुसंख्यकों के मतों से विजयी होने वाली सत्ता केवल अल्पसंख्यकों के निहितार्थ कार्यो के लिए चिंतित रहती है। इसलिये अखिल भारतीय संत परिषद के राष्ट्रीय संयोजक क्रांतिकारी सन्त यति नरसिंहानंद सरस्वती जी जनसँख्या नियंत्रण कानून बनवाने के लिए वर्षो से संघर्षरत है। देश के विभिन्न नगरों में भ्रमण करके प्रमुख धर्माचार्यो के आशीर्वाद से स्वामी जी ने अपने व उनके रक्त से हजारों पत्र लिखकर माननीय प्रधानमंत्री, महामहिम राष्ट्रपति व सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश को जिला अधिकारियों के माध्यम से प्रेषित किये है। लेकिन अभी तक शासन–प्रशासन ने कोई प्रतिक्रिया नही करी। ये सब एक संत के शखनाद के प्रति असंवेदनशील है। अंततः धर्मरक्षार्थ एक समान जनसंख्या नियंत्रण कानून बनाने की अनिवार्यता को समझते हुए यति नरसिंहानंद सरस्वती जी १ नवम्बर २०१८ से शिवशक्ति धाम, चंडी देवी मंदिर, डासना (गाजियाबाद) में आमरण अनशन पर बैठे हुए हैं। उनका शासन से विनम्र अनुरोध है कि जब तक हिन्दू–मुस्लिम जनसंख्या के बढ़ते व बिगड़ते अनुपातिक संतुलन को नियंत्रित नही किया जायेगा तब तक भारत की अस्मिता व अखंडता पर संकट मंडराता रहेगा। ध्यान रहें स्वामी जी सत्य सनातन वैदिक संस्कृति की रक्षार्थ दो दशकों से राष्ट्र के विभिन्न क्षेत्रों में अनेक प्रकार से जनमानस को धर्माधों से सतर्क रहने के लिए घोर तपस्या कर रहें हैं। उनके इस आमरण अनशन का मुख्य लक्ष्य भी यह है कि वैदिक हिन्दू संस्कृति के वाहकों के वर्तमान व भविष्य को कैसे सुरक्षित करा जाये? अतः आप सभी राष्ट्रभक्तो से विनम्र अनुरोध है कि धर्म व राष्ट्र रक्षार्थ इस अभियान से जुड़े और केंद्रीय सरकार को जनसँख्या नियंत्रण कानून बनवाने के लिए विवश करें।

विनोद कुमार सर्वोदय

शेष पृष्ठ 8 का

क्रान्तिकारी रामप्रसाद बिस्मिल.....

नहीं, वरन् माँ! तेरे प्रति मोह के थे। मौत से मैं नहीं डरता माँ–तुम विश्वास करो।'' आँसू वहीं सूख गए और हल्की मुस्कराहट चेहरे पर पुनः आ गई। तभी माँ ने शिवराम वर्मा का हाथ पकड़कर आगे कर दिया–''**यह तुम्हारे आदमी हैं। पार्टी के बारे में जो भी चाहो, इनसे कह सकते हो।''** दोनों बातें करने लगे। उस समय माँ का स्वरूप देखकर जेल के सभी अधिकारी दंग रह गये और यह कहने को बाध्य हुए–''**बहादुर माँ का बेटा ही बहादुर हो सकता है।''** उस दिन इस समय माँ की विजय हुई। सब तरफ से श्रद्धा उमड़ पड़ी–माँ के बहादुर हृदय पर सभी को गर्व हुआ। मिलने का समय समाप्त हुआ–सब विदा हो गए।

महाप्रयाण : सारा आकाश आज रक्त–रंजित–सा था। चारों ओर लालिमा। **मन्दिरों में घंटियाँ आज नहीं बजीं। मस्जिद की अजान नहीं हुई।** गोरखपुर के आसमान पर आज धूल चढ़ गई थी–ऊँची, बहुत ही ऊँची। वह आसमान पर छा जाने को लालायित दीख पड़ती थी। अम्बर की लालिमा को आज वह अपने विशाल आँचल से ढक लेना चाहती थी–तभी तो **चहुँ ओर गर्दो-गुबार का वातावरण था–धरती का पुत्र आज उसकी गोद में समाने को उद्विग्न है,** ताकि उसके लाल को नजर न लग जाए।

१६ दिसम्बर, १६२७ सोमवार को प्रातः रामप्रसाद ''बिस्मिल'' नित्य की भाँति सोकर उठे, स्नान किया, वन्दना की और **धोती-कुर्ता पहनकर चल पड़े अपनी अन्तिम यात्रा की पगदण्डी पर।... रामप्रसाद जी आज बहुत प्रसन्न थे।** हँस–हँस कर वे जेल के अधिकारियों, कर्मचारियों एवं अन्य बन्दियों का अभिवादन स्वीकार करते हुए आगे बढ़ रहे थे। लोग उन्हें देखते उनके श्रद्धावत आँसू टपक पड़ते। परन्तु इस तपस्वी युवा के मन पर कोई प्रभाव न पड़ता... **शान्तचित्त... मुस्कराते चेहरे की दो चमकदार आँखें सबकी ओर घूमतीं और फिर संन्यासी की भाँति एक पलक झपकती** और कमल की पंखुड़ियों के समान पुनः खिल उठतीं।... ''**भारतमाता की जय**'' ''**वन्देमातरम!!**''.... के अतिरिक्त वे कुछ न कहकर फाँसी के तख्ते के निकट बढ़ते गए।... उनके हृदयोद्गार थे।

मालिक तेरी रजा रहे और तू ही तू रहे।
बाकी न मैं रहूँ, न मेरी आरजू रहे।।
जब तक कि तन में जान, रगों में लहू रहे।
तेरा ही जिक्र या तेरी ही जुस्तजू रहे।।

उन्होंने जोर से कहा–

"I wish the downfall of British Empire" अर्थात् मैं ब्रिटिश साम्राज्य का विनाश चाहता हूँ। **इतना कह कर वे फाँसी के तख्ते पर चढ़े। उन्होंने उस वक्त दो मिनट शान्त मुखर हो–''ओ३म् विश्वानिदेव सवितर्दुरितानि परासुवः यद्भद्रं तन्नऽसुवः, यस्यसिसम् यस्य देव, यस्य छाया, अमृतं। तस्य मितौस्मै देवः या विश्वानि देव... ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः!!''** मन्त्र का जाप कर कहा–

मरते 'बिस्मिल', 'रोशन', 'लाहरी', अशफाक अत्याचार से।
होंगे पैदा सैकड़ों इनके रुधिर की धार से।।

और अन्तिम बार धरती माता को प्रणाम किया–धूलि को माथे पर चन्दन की भाँति लगाया और... ''**वन्देमातरम्**'' कहते हुए फाँसी के फन्दे से झूल गए। आग की तरह खबर सारे गोरखपुर में फैल गई। गली–गली में शोक छा गया। सारे देश में हलचल–सी मच गई–''**बिस्मिल शहीद हो गए।'' हजारों कण्ठों ने नारा लगाया–रामप्रसाद बिस्मिल अमर रहें!** और रामप्रसाद 'बिस्मिल' की ही गूँज उठी यह वाणी–

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले
वतन पर मरने वालों का यह बाकी निशां होगा।

शेष पृष्ठ 1 का

हिन्दू महासभा शीघ्र बनायेगी.....

तक सत्ता में रहने पर कांग्रेस ने श्री राम जन्मस्थान पर मंदिर का निर्माण नहीं होने दिया। छः वर्षों तक श्री अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार ने इस पर कोई कार्य नहीं किया था। अब साढ़े चार वर्षों से श्री नरेन्द्र मोदी की सरकारने भी इस दिशा में एक कदम भी नहीं रखा है। २०१६ के लोकसभा चुनाव में पूर्व श्री नरेन्द्र मोदी ने देश की जनता से श्रीराम जन्मस्थान पर मंदिर बनाने, गौहत्या पर प्रतिबंध लगाये, धारा–३७० को समाप्त करने एवं समान आचार संहिता लागू करने का वचन दिया था। परन्तु इन चारों में से किसी भी मुद्दे पर कोई कार्य नहीं करके देश के १२५ करोड़ हिन्दुओं के साथ धोखा किया है। देश की जनता इसे स्वीकार नहीं करेगी और २०१६ के लोकसभा चुनाव में भाजपा को धूल चटायेगी। उन्होंने कहा कि भाजपा ने बढ़ती हुई मुस्लिम

आबादी एवं बांग्लादेशियों तथा रोहिंग्याओं के घुसपैठ को रोकने की दिशा में भी कोई प्रयास नहीं किया है। हिन्दू महासभा नेताओं ने कहा कि देश की जनता भाजपा से दुखी है और उसे चुनावों में सजा देगी। उन्होंने कहा कि अखिल भारत हिन्दू महासभा शीघ्र ही भाजपा और कांग्रेस का विकल्प बनकर उभरेगी।

राम के नाम पर बंद हो राजनीति : हिंदू महासभा

रामंदिर निर्माण के मार्ग में आ रहीं बाधाएं दूर करने को निर्मोही अखाड़ा में हवन-पूजन

अमर उजाला ब्यूरो

अयोध्या। रामंदिर निर्माण में आ रहीं बाधाओं के निवारण की कामना से अखिल भारत हिंदू महासभा व रामंदिर मामले के पक्षकार निर्मोही अखाड़ा के महंत दिनेंद्र दास द्वारा हवन किया गया। हिंदू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चंद्रप्रकाश कौशिक ने कहा कि राजनीतिक लोगों की बुद्धि-शुद्धि के लिए हवन किया गया है। राम के नाम पर अब राजनीति बंद होनी चाहिए। कहा कि हमें उम्मीद है कि 11 दिसंबर से संसद का सत्र शुरू हो रहा है सरकार रामंदिर के लिए कुछ करेगी। यदि नहीं करती है तो हम सभी पक्षकारों से बार्ता करेंगे और एक साथ मिलकर सुप्रीम कोर्ट जाएंगे। कहा कि मोदी सरकार के विकल्प के रूप में आगामी लोकसभा चुनाव में हिंदू महासभा मैदान में उतरेगी।

हिंदू महासभा के महासचिव मुन्ना शर्मा ने कहा कि राम के नाम पर सत्ता में आई भाजपा को बताना चाहिए कि रामंदिर निर्माण में क्यों देरी हो रही है। महंत दिनेंद्र दास ने कहा कि रामंदिर निर्माण के लिए जो भी आगे आएगा उसका स्वागत है। संवैधानिक तरीके से या आपसी सहमति से किसी भी तरीके से रामंदिर निर्माण का मार्ग प्रशस्त होना चाहिए। इससे पूर्व हिंदू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने रामलला के दर्शन किए। इस दौरान प्रदेश अध्यक्ष योगेंद्र वर्मा, प्रभात सिंह सहित हिंदू महासभा के कार्यकर्ता मौजूद रहे।

अयोध्या के निर्मोही अखाड़ा में रामंदिर के लिए हवन-पूजन करते हिंदू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष व महंत दीनेंद्र दास। अमर उजाला

राम के नाम पर बंद हो राजनीति : हिंदू महासभा

रामंदिर निर्माण के मार्ग में आ रहीं बाधाएं दूर करने को निर्मोही अखाड़ा में हवन-पूजन

शेष पृष्ठ 2 का

नारी और पवित्रता का.....

जैसे फलों की टोकरी में से आप अच्छे–अच्छे फल तो चुन लेते हैं और शेष गले–सड़े फल फेंक देते हैं, इसी प्रकार विचारों का चयन करके केवल शुभ विचारों को ही प्रश्रय दें। बुरे विचारों को नकार दें। कामवासना आदि दूषित विचारों को बाहर निकाल दें। केवल शुद्ध पवित्र विचारों को ही आने दें। विचार गतिमान होता है। मन के द्वारा विचार–संक्रमण होता है। अपने विचारों द्वारा आप अपना चरित्र स्वयं बनाते हैं। मनुष्य की रचना विचारों का परिणाम है। शक्तिशाली बनने का विचार करने से आप शक्तिशाली बनेंगे। ऐसे ही अन्य गुणों–पवित्रता, धीरज, निःस्वार्थता और आत्मसंयम की भी बात है। विचार उच्च होंगे, तो आप उच्च ही बनेंगे। पवित्रता के आदर्श को ध्यान में रखते हुए पवित्र विचारों से अपने चरित्र को पवित्र रखिए।

कुलनारियाँ अपनी चाल–ढाल, आहार–विहार, आचार–विचार, वाणी–व्यवहार आदि किसी भी रूप में बाहरी दिखावे का आश्रय नहीं लेतीं। वे अपनी सरल प्रकृति और सादगी के शृंगार में ही पूर्ण शोभा को प्राप्त होती है। लज्जा नारी–जाति का सबसे बड़ा आभूषण है। लज्जा के साथ ही साथ दूसरे सद्‌गुण भी स्त्रियों को स्वयं ही प्राप्त हो जाते हैं। सलज्ज नारी सदाचार और सतीत्व की सजीव मूर्ति है। विजय, विभूति, नीति और कीर्ति के आकाश में लज्जा कुलीनता की फहराती हुई ध्वजा है। लज्जा–विहीन स्त्री सुगन्ध–रहित पुष्प के समान है। जिस स्त्री में सलज्जता, विनय या नम्रता नहीं है, सर्वांगसुन्दरी होते हुए भी उसका सौन्दर्य फीका है। नारी को ऐसी सच्ची विद्या की आवश्यकता है, जिसकी प्राप्ति से मन की मलिन वृत्तियों का नाश, चित्त की शुद्धि, सत्त्व का विकास, विनम्रता इन्द्रिय–संयम, मनोजय तथा आत्मज्ञान प्राप्त हो जाये। बालक–बालिकाओं के लिए धर्म और सदाचार की शिक्षा का ठीक–ठीक प्रबन्ध होना चाहिए ताकि वे यथोचित शिक्षा प्राप्त कर, पवित्रता के आदर्श को निभाते हुए आदर्श नागरिक बन सकें।

शेष पृष्ठ 6 का

मदरसे एक सच्चाई.....

फिर मौत के घाट उतार दें। इसी विषाक्त दर्शन का पाठ अधिकतर मदरसों में पढ़ाया जा रहा है, जो लव–जिहाद के विस्तार में भी मुख्य भूमिका निभा रहा है। मदरसा शिक्षा प्रणाली का सबसे बड़ा दोष यह भी है कि यहाँ के छात्रों का सम्पर्क साधारणतः मुस्लिम बच्चों और अध्यापकों के साथ ही होता है। प्रारम्भिक परवरिश में ही बाहरी दुनिया से कटाव उन्हें अन्य समुदायों के आचार–विचार और जीवनदर्शन व शैली से अपरिचित रखता है। निश्चित ही सभी मदरसे ऐसे नहीं होंगे, कुछ इसके अपवाद भी होंगे, लेकिन उनकी संख्या कम है।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक.....150/- रुपये

द्विवार्षिक.....300/- रुपये

आजीवन सदस्य.....1500/- रूपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर

''हिन्दू सभा वार्ता'' के नाम भेजें।

पता :- **हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001**

नोट :- केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंर्तराष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिंसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।

आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

शेष पृष्ठ 5 का

जल जिसका विकल्प.....

सभी राज्यों में भू जल संचय के लिए मास्टर प्लान तैयार कर लिया था। इसके अनुसार जल संचय के लिए देश भर में ३६ लाख निर्माण कार्य किये जाने हैं। इस पर खर्च का अनुमान २५ हजार करोड़ रुपये का। मगर लक्ष्य जितना बड़ा है, काम उतना ही कम हुआ है। नौवीं पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत केवल १६५ ऐसे निर्माण कार्य हुए। सरकार ने माना कि जहाँ यह उपाय हुए, आस–पास में भू–जल की स्थिति को सीधा लाभ मिला। मगर प्रयोग सफल होने के पश्चात् आगे नहीं बढ़ा। दसवीं योजना के अन्तर्गत सार्वजनिक इमारतों की छत से बारिश के पानी को सहेजने पर जोर दिया। लेकिन कुछ सौ स्कूलों में रेनवाटर हार्वेस्टिंग शुरू हो सका। ११ वीं पंचवर्षीय योजना के दौरान वर्षा जल संचय के लिए सिर्फ सौ करोड़ रुपये दिये गये। इसमें ७७ करोड़ की लागत से सिर्फ ८० प्रोजेक्ट प्रारम्भ हुए। ये सभी आठ करोड़ घनमीटर पानी ही सहेज सकते हैं।

वास्तव में चार महीने मानसून के दौरान, जब चारों ओर पानी ही पानी नजर आता है तब हम उस पानी का संग्रह कर लें तो क्यों बूँद–बूँ के लिए तरसें? ये जल पोखरों, तालाबों, नालों और नदियों से होता हुआ महासागर में समाधिस्थ हो जाता है। तो क्यों ना बारिश के रूप में प्रकृति द्वारा किये जाने वाले जल का संचय प्रारम्भ कर दें? जैसे हम अपनी आवश्यकतानुसार प्रत्येक सामान के लिए भंडारण करते हैं, उसी प्रकार अपने परिवार की जरूरत भर के पानी का भंडारण क्यों नहीं? और ये तकनीक आज की नहीं पुरानी है। हाँ! पूर्व में परम्परागत रूप में देश में जल संरक्षण तकनीक के अन्तर्गत बावड़ी, स्टोपवेल, झिरी, लेक, टैंक आदि का प्रयोग किया जाता रहा है। ऐसे जल स्रोतों का रखरखाव स्वयं लोगों द्वारा किया जाता था, जिसे जल के अधिकाधिक उपयोग द्वारा आवश्यकताओं को पूर्ण किया जाता था। भंडारण कहीं भी किया जा सकता है। इस तंत्र का डिजाइन तैयार करने के अन्तर्गत भंडारण का स्थान, औसत वर्षा, वर्षा की तीव्रता, मिट्टी, भौगोलिक स्थिति और भू–जल स्तर आदि का ध्यान रखता होता है।

वस्तुतः जल की आवश्यकता को समझते हुए इसका उपयोग एक अनमोल वस्तु के रूप में बचत के साथ किया जाना चाहिए जो आज की मांग व आवश्यकता दोनों ही हैं।

शेष पृष्ठ 9 का

राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी.....

पुनर्जन्म में मेरी अटूट आस्था है, अतः अगले जन्म में मैं स्वस्थ शरीर के साथ ही पैदा होना चाहता हूँ ताकि अपने अधूरे कार्यों को पूरा कर देश को स्वतंत्र करा सकूँ। इसीलिए मैं रोज सुबह व्यायाम करता हूँ। आज मेरे जीवन का सर्वाधिक गौरवशाली दिवस है तो यह क्रम मैं कैसे तोड़ सकता हूँ?' यज्ञ के आयोजन के पार्श्व में लाहिड़ी द्वारा जेलर को दिया गया अन्तिम संदेश एक शिलापट्ट पर अंकित है–'मैं मरने नहीं जा रहा, अपितु भारत को स्वतंत्र कराने के लिए पुनर्जन्म लेने जा रहा हूँ।' इसके अतिरिक्त इन समस्त घटनाओं का उल्लेख भी गोंडा जिला कारागार के फाँसीगृह में स्थापित लाहिड़ी जीवनवृत्त शिलापट्ट पर अंकित है। धर्म सम्प्रदाय से ऊपर उठकर लाहिड़ी की अन्तिम इच्छा का सम्मान करने की यह परम्परा आज तक कायम है। लाहिड़ी की क्रान्तिकारी महानायक छवि को पुष्ट करती कविता शहीद लाहिड़ी के प्रति भी जिला कारागार के फाँसीगृह में स्थापित एक अन्य शिलापट्ट पर अंकित है।

शेष पृष्ठ 1 का

न्यायपालिका और भाजपा की.....

हुए। न्यायपालिका, केन्द्र की भाजपा सरकार एवं श्री राम मंदिर के विरोधियों के बुद्धि–शुद्धि के लिये हवन एवं यज्ञ आयोजित किया गया। इस अवसर पर उपस्थितजनों को संबोधित करते हुए श्री चन्द्रप्रकाश कौशिक ने कहा कि न्यायपालिका, केन्द्र की भाजपा सरकार, आरएसएस एवं विहिप मिलकर श्री राम मंदिर के मुद्दे को लटका रहे हैं। भगवान श्री राम उनकी बुद्धि को ठीक करें। श्री मुन्ना कुमार शर्मा ने कहा कि भगवान श्री राम १२५ करोड़ हिन्दुओं को मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। हिन्दुस्तान की पहचान भगवान राम से है, न कि आक्रांता बाबर से है। हमें श्री राम के जन्मस्थान पर मंदिर के अलावा कुछ स्वीकार्य नहीं है। न्यायपालिका के निर्णय के तुरंत बाद हिन्दू महासभा द्वारा निर्मोही अखाड़ा के साथ मिलकर श्री राम जन्मस्थान पर भव्य मंदिर का निर्माण कराया जायेगा। उन्होंने केन्द्र की श्री नरेन्द्र मोदी सरकार से अध्यादेश लाकर मंदिर का निर्माण तुरंत शुरू करने की मांग की। निर्मोही अखाड़ा के श्री महंत श्री दिनेद्र दास जी महाराज ने कहा कि मंदिर मुद्दे से केवल निर्मोही अखाड़ा और हिन्दू महासभा का जुड़ाव है। बाकी पार्टियां तथा संगठन केवल इस मुद्दे को उलझा रहे हैं। उन्होंने कहा कि भगवान श्री राम ऐसी पार्टियों एवं संगठनों के नेताओं को सद्‌बुद्धि प्रदान करें। निर्मोही अखाड़ा एवं हिन्दू महासभा के पदाधिकारियों ने इस मुद्दे पर राजनीति करने वाले नेताओं से आहवान किया है कि वे इस पर तुरंत राजनीति करना बंद करें, अन्यथा श्री राम का कोप बनना पड़ेगा, जिसकी कीमत उन्हें २०१६ के लोकसभा चुनाव में चुकानी पड़ेगी।

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिन बुधवार - बृहस्पतिवार

डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77

12 साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता निष्कर्ष दिनांक 12 दिसम्बर से 18 दिसम्बर 2018 तक

यह भी सच है

अवैध मस्जिद को सील करने पर बवाल

अखबार मशरिक (१४ सितम्बर) के अनुसार गुरुग्राम में एक अवैध मस्जिद को सील किए जाने के विवाद ने साम्प्रदायिक रूप ले लिया है। प्रशासन के अनुसार यह मस्जिद अवैध रूप से बनाई गई है और विस्फोटक पदार्थों के डिपो से मात्र २०० मीटर ही दूर है। साम्प्रदायिक तत्वों ने इस घटना की आड़ लेकर हरियाणा की भाजपा सरकार को अपना निशाना बनाना शुरू कर दिया है और दुष्प्रचार किया जा रहा है कि स्थानीय लोग मुसलमानों को किराए पर मकान नहीं दे रहे हैं। ज्ञातव्य है कि मदीना मस्जिद नामक इस मस्जिद में लाउडस्पीकरों के इस्तेमाल को लेकर विवाद उत्पन्न हुआ था जिसके बाद मस्जिद को सील कर दिया गया। मस्जिद सील करने के खिलाफ स्थानीय मुसलमान कई दिनों से धरना दे रहे हैं। अब इस धरने में हरियाणा के पूर्व कांग्रेसी मंत्री आफताब अहमद भी शामिल हो गए हैं। नगर निगम का कहना है कि यह मस्जिद उच्च न्यायालय के निर्देश पर सील की गई है। आफताब अहमद ने दावा किया कि सरकार का रूख मुस्लिम विरोधी है और वो मुसलमानों को जानबूझकर किसी ना किसी बहाने से परेशान कर रहे हैं।

अखबार मशरिक (१५ सितम्बर) के अनुसार मुसलमानों ने धमकी दी है कि अगर इस मस्जिद की सील को नहीं हटाया गया तो वह आत्मदाह कर लेंगे। इन नेताओं ने प्रशासन पर आरोप लगाया कि हिन्दू साम्प्रदायिक संगठनों के दबाव के कारण हरियाणा में मुसलमानों को परेशान किया जा रहा है।

अखबार मशरिक (१६ सितम्बर) के अनुसार मुसलमानों ने हरियाणा भवन पर प्रदर्शन करके मांग की है कि गुरुग्राम की मस्जिद का ताला फौरन खोला जाए ताकि क्षेत्र के मुसलमान उसमें नमाज अदा कर सकें। जमीयत उलेमा के महासचिव महमूद मदनी ने हरियाणा के मुत्र्यमंत्री को एक पत्र भेजा है जिसमें मांग की गई है कि इस मस्जिद को नमाज पढ़ने के लिए फौरन खोल दिया जाए। **हमारा समाज (१८ सितम्बर)** ने दावा किया है कि गत दिनों गुरुग्राम में हिन्दुओं की हुई एक पंचायत में फैसला किया गया है कि किसी मुसलमान को मकान या दुकान किराए पर ना दिया जाए। इस पंचायत में यह भी मांग की गई है कि मुसलमानों के दबाव में आकर प्रशासन को इस मस्जिद की सील नहीं खोलनी चाहिए।

ईरान सरकार पर आतंकवाद फैलाने का आरोप

अखबार मशरिक (१५ सितम्बर) के अनुसार ईरान के विपक्षी दल मुजाहिद्दीन अल–खलक ने दावा किया है कि ईरान सरकार यूरोप में आतंकवादी गतिविधियों का संचालन कर रही है। यह आरोप लंदन में आयोजित एक संवाददाता सम्मेलन में लगाया गया। इस संगठन के प्रवक्ता दौलत नौरोजी ने दावा किया कि यूरोप में जिहादी आतंकवादी गतिविधियों के संचालन की मंजूरी ईरानी राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद् द्वारा दी जाती है जिसके प्रमुख हसन रोहानी हैं। इन गतिविधियों का संचालन ईरान ने सर्वोच्च धार्मिक नेता सैयद अली हुसैनी खोमैनी के कार्यालय द्वारा किया जाता है। आतंकवादी गतिविधियों का संचालन एक विशिष्ट उच्चाधिकारी रजा अमीरी द्वारा किया जाता है जिसका संबंध ईरान के गुप्तचर विभाग के मंत्री से है। उन्होंने दावा किया कि पेरिस में जून माह में जो धमाका हुआ था उसकी योजना एक ईरानी गुप्तचर अधिकारी ने तैयार की थी जो कि इस समय जर्मनी की एक जेल में बंद है। इस विपक्षी संगठन ने यह भी आरोप लगाया कि ईरान में जो सरकार विरोधी प्रदर्शन हो रहे हैं उनको कुचलने के लिए तानाशाही तरीके अपनाए जा रहे हैं। इस पत्रकार सम्मेलन में यह भी दावा किया गया कि ईरानी प्रशासन अरबेनिया, बेल्जियम आदि में आतंकवादी जिहादियों को प्रोत्साहन दे रही है और उसका संचालन कर रही है।

कबिरा खड़ा बजार में

बीजेपी में बागी, बगावत और बसुन्धरा

राजस्थान विधानसभा चुनाव में राजनीति का ऊंट किस करवट बैठता है, यह तो आने वाला समय ही बताएगा लेकिन जिस हिसाब से भाजपा में टिकट वितरण के बाद से बगावत हो रही है, उससे भाजपा को नुकसान होना अवश्यंभावी है। वसुंधरा राजे ने टिकट बंटवारे के मुद्दे पर भिड़ रहे बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह पर स्पष्ट रूप से जीत हासिल कर ली है। अब तक बीजेपी ने जिन योद्धाओं को चुनाव मैदान में उतारा है, इनमें राजे के वफादार भरे पड़े हैं। बीजेपी अधिकांश संख्या में वर्तमान विधायकों को टिकट नहीं देने की शाह की योजना को नजरअंदाज करने के पीछे मुख्य वजह पार्टी में सम्भावित बगावत को रोकना था। यह बगावत बड़ी संख्या में विधायकों को दरकिनार कर दिए जाने से फूटती है। पार्टी के पुराने वफादारों पर विश्वास जताते हुए राजे को उम्मीद थी कि जिन नेताओं को टिकट नहीं मिले हैं, उनसे भीतरघात के खतरे को वो विफल कर देंगी। मगर वो उम्मीद खत्म हो चुकी है, क्योंकि दर्जनभर विधायक और राजे के कई मंत्रियों ने पिछले दिनों खुले तौर पर पार्टी से बगावत की है। बगावत करने वाले सुरेद्र गोयल राजे कैबिनेट में लोक स्वास्थ्य अभियंता विभाग के मंत्री थे और पांच बार विधायक रह चुके थे। सूची में नाम नहीं देखने के बाद उन्होंने पार्टी छोड़ दी। इस्तीफे के बाद अलग होने का आरोप उन्होंने आरएसएस पर लगाया। पार्टी छोड़ने वाले प्रमुख नामों में दौसा से सांसद हरीश मीणा सबसे प्रमुख हैं। राजस्थान में डीजीपी रह चुके हरीश मीणा कांग्रेस में चले गये, जो किरोड़ीलाल मीणा को चुनौती देना चाहते हैं। मीणा समुदाय पूर्वी राजस्थान की ३० सीटों पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। लेकिन हरीश मीणा के कांग्रेस में जाने के बाद इस बड़े वोटबैंक को लुभाने की बीजेपी की चाहत धूमिल हो चुकी है। बीजेपी छोड़ने वाले युनूस खान के साथ एक और बड़े नेता हबीबुर रहमान नागौर से वे ५ बार विधायक रहे थे, जिन्हें इसलिए टिकट नहीं दिया गया, क्योंकि कथित रूप से बीजेपी की योजना मुस्लिम उम्मीदवार खड़े करने की नहीं है। रहमान तुरंत कांग्रेस में चले गये। कांग्रेस ने अब उन्हें पार्टी उम्मीदवार बना दिया है। बीजेपी ने राजस्थान ने हाल के वर्षो में जो ध्रुवीकरण की राजनीति की है, यह उसी दिशा में एक प्रयास है। सूची जारी होने के बाद से दर्जनभर से ज्यादा जिलों में बीजेपी नेताओं और कार्यकर्ताओं का विरोध सामने आया है। जयपुर में पार्टी कार्यालय पर कई बार प्रदर्शन हो चुके हैं और प्रदर्शनकारियों ने नारेबाजी और बहसबाजी की है। मंत्रियों और विधायकों को छोड़ दें, जिन्हें टिकट नहीं मिला है, तो भी बड़ी संख्या में पार्टी कार्यकर्ता टिकट बंटवारे से दुखी हैं। लेकिन राजे का दावा है कि जल्द ही इन प्रदर्शनों पर नियंत्रण हो जाएगा। मगर एक ऐसे समय में जबकि राजे राजस्थान में सत्ता को बनाए रखने की कोशिश में जुटी हैं, बड़े नेताओं के पार्टी छोड़ने और पार्टी कार्यकर्ताओं में गुस्से की वजह से बीजेपी के लिए माहौल खराब हो रहा है। वसुंधरा ने शाह के साथ भले ही लड़ाई जीत ली हो और बीजेपी उम्मीदवार चुनने की प्रक्रिया में वह भारी पड़ रही हों, लेकिन राजस्थान में अपने विरुद्ध बढ़ते प्रदर्शनों से निपटना उनके लिए काफी मुश्किल होगा।

वीरेश त्यागी
E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 12 दिसम्बर से 18 दिसम्बर 2018 तक

प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी
इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।